ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष ५८ अंक १५ मूल्य ₹१६ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अगस्त (प्रथम) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

श्रीमती माणिक कँवर

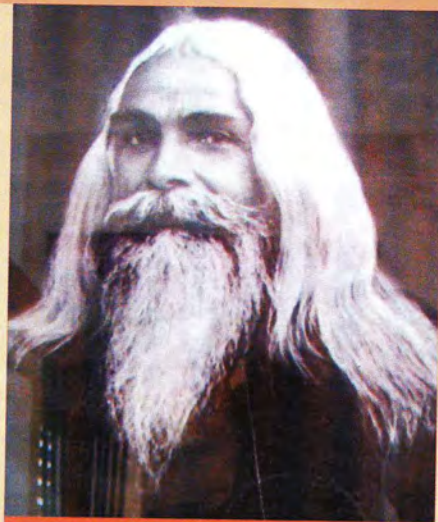

श्री केसरी सिंह बारहट

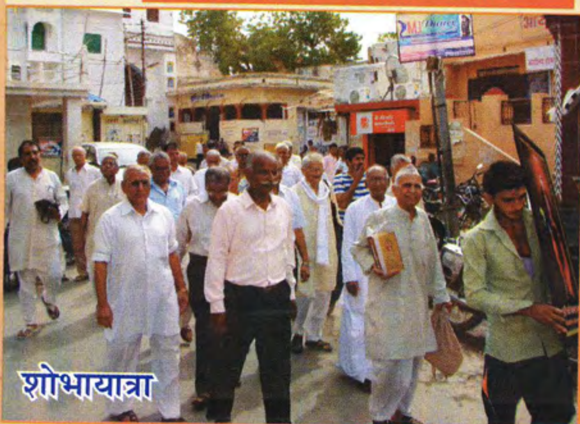

शोभायात्रा

श्री प्रवेश जी सिंगला उद्‌बोधन करते हुए

श्री केसरी सिंह बारहट स्मारक समिति द्वारा शाहपुरा में संरक्षित संग्रहालय में श्रीकृष्ण सिंह बारहट एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के मध्य हुए पत्र-व्यवहार की प्रतियां समिति को सौंपते हुए सभा के पदाधिकारी एवं अन्य आर्यजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : १५
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: श्रावण कृष्ण, २०७३
कलि संवत्: ५११७
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति का मूल्य - रु. १५/-

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.। **एक प्रति का मूल्य** - पाउण्ड-३
एक प्रति का मूल्य - डालर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।*

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अगस्त प्रथम २०१६

अनुक्रम

१. जाकिर नाईक - देशद्रोही क्यों?	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय		१०
४. Yajnyopaveeta and Yajnya	Sudhir Anand	१३
५. १३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		१८
६. परोपकारिणी की स्थापना पर हर्ष बधाई		१९
७. जिज्ञासा समाधान-११६	आचार्य सोमदेव	२५
८. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२७
९. अदीना स्याम शरदः शतम्	श्री गजानन्द आर्य	२८
१०. संस्था-समाचार		३२
११. ज्योतिष-शिविर	ब्र. दिलीप,	३७
१२. आर्यजगत् के समाचार		३९
१३. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३८		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

जाकिर नाईक - देशद्रोही क्यों?

इस समाज की समस्या है कि यहाँ सत्य से सामना करने का किसी में साहस नहीं है। जो लोग कुछ जानते नहीं उनको हम दोषी नहीं मान सकते, उनके सामने तो जो भी कोई अपनी बात को अच्छे प्रकार से रखेगा, वे उसी को स्वीकार कर लेते हैं। जिनके पास अच्छा-बुरा पहचानने की क्षमता है, वे स्वार्थ के वशीभूत सत्य कहने से बचते हैं। इसी अज्ञान के वातावरण में इस्लाम का जन्म हुआ है। इस्लाम के जन्म के समय जो लोग थे, वे मूर्त्ति पूजक थे। पैगम्बर मोहम्मद ने मूर्ति-पूजा का विरोध किया। मन्दिर तोड़े, लोगों को मूर्ति-पूजा से दूर रहने के लिये कहा। पैगम्बर मोहम्मद का यह प्रयास पहले से अधिक घातक और अज्ञानता को बढ़ाने वाला रहा। पहले लोग मूर्ति-पूजा के अज्ञान में अनुचित कार्यों को करते थे। अब इसमें और अधिक अज्ञानता और उसके प्रति दुराग्रह उत्पन्न हो गया।

इस्लाम में जो सबसे अमानवीय बात है, वह मनुष्य को स्वविवेक से वञ्चित करना है। प्राय: सभी गुरु, नेता, पण्डित इस उपाय का आश्रय लेते हैं, परन्तु इस्लाम में दूसरे के विचार की उपस्थिति ही स्वीकार नहीं की गई। पैगम्बर ने शिष्यों, अनुयायियों को निर्देश दिया कि मेरे अतिरिक्त किसी की बात सुननी ही नहीं। विरोधी की बात सुनना भी पाप है, मानना तो दूर की बात है। दूसरे का विचार सुनने को पाप (कुफ्र) माना गया। जो कुछ मोहम्मद साहब ने किया और कहा, वही आदर्श है, जो कुछ कुरान में लिखा गया, वह अल्लाह का अन्तिम आदेश है।

इस विषय में इस्लाम पर शोध करने वाले विद्वान् अनवर शेख लिखते हैं- कुरान अल्लाह का वचन नहीं हैं, बल्कि (पैगम्बर) मुहम्मद की रचना है, जिसके लिये उसने अपनी पैगम्बरता बनाये रखने के लिये अल्लाह को श्रेय दिया है। इसके अनेकों प्रमाण हैं- (सम आस्पेक्ट्स ऑफ कुरान, पृ. १७, १८, २१)

दूसरी सम्पूर्ण मानव समाज के प्रति हानि पहुँचाने वाली बात- दुनिया में एक ही दीन है और वह है इस्लाम और इसके अतिरिक्त संसार में किसी भी विचार का अस्तित्व ही स्वीकार नहीं है। वह विचार दूसरा नहीं है बल्कि विरोधी और शत्रु है। इस संसार में रहना हो तो उसे मुसलमान बनकर ही रहना चाहिए। सोचने की बात है कि क्या किसी अन्य पर किसी का इतना अधिकार हो सकता है कि वह उसके जीने के और स्वतन्त्रता के अधिकार को ही समाप्त कर दे? इस्लाम या मोहम्मद साहेब को यह अधिकार किसने दिया? किसी ने भी नहीं दिया। यह अधिकार उनका स्वयं का उपार्जित है। परन्तु संसार बड़ा विचित्र है, उस अधिकार को ऐसे बताया जा रहा है, जैसे भगवान ने उन्हें ही यह अधिकार देकर भेजा है।

इस्लाम के संस्थापक ने जहाँ इस्लाम को एक मात्र संसार का वास्तविक धर्म घोषित किया, वहाँ इस विचार के लिये, इसको मानने वाले को यह भी अधिकार दिया कि किसी भी उपाय से वे इस धर्म का प्रचार-प्रसार करें। इसके लिये लोभ, लालच, धोखा, हिंसा, बलात्कार, किसी भी उपाय का सहारा क्यों न लेना पड़े। पैगम्बर ने अपने धर्म को बढ़ाने-फैलाने के लिये सत्ता का सहारा लिया और तलवार के बल पर अपने देश में और दूसरे देशों में उसको फैलाया। इसको जिहाद कहा गया। मुसलमानों के लिये जिहाद एक प्रेरणा और आवश्यक कर्त्तव्य होने के कारण इस्लाम अहिंसक नहीं हो सकता। एक मुसलमान के लिये किसी गैर-मुसलमान के विरुद्ध जिहाद से मुकर जाना एक महापाप है। जो ऐसा करेंगे वे जहन्नुम की आग में पकेंगे। डॉ. के.एस. लाल (थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस ऑफ मुस्लिम स्टेट इन इण्डिया, पृ. २८६)

इस धर्म को सुरक्षित और बलवान बनाने के लिये एक और सिद्धान्त प्रतिपादित किया- ''संसार में राज्य करने का अधिकार केवल मुसलमान को है।'' पैगम्बर की मान्यता के अनुसार मुसलमान और अन्य धर्मावलम्बी में राज्य करने का अधिकार इस्लाम के मानने वाले का है। यदि दो व्यक्ति मुसलमान हैं तो राज्य का अधिकार अरब के मुसलमान का है, अरब से बाहर के मुसलमान को नहीं। यदि सत्ता का विभाजन अरब के दो मुसलमानों के बीच होना है, तो यह अधिकार मक्का के मुसलमान को ही मिलना चाहिये। यदि दोनों मुसलमान मक्का के ही हों, तो

यह अधिकार कुरैश को मिलना चाहिए। अपने आपको ही ठीक और श्रेष्ठ मानने के इस विचार को कुछ भी करके प्राप्त करने की स्वतन्त्रता ने इस्लाम के अनुयायी को अपराध की ओर प्रेरित किया।

इस्लाम को धर्म की श्रेणी में रखने की आवश्यकता खुदा और जन्नत के कारण है। ये दोनों वस्तुएँ तो इस संसार में मिलती नहीं है, अन्यथा इस्लाम का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। सभी धर्म अंहिसा और संयम के बिना नहीं चलते, क्योंकि धर्म के यात्रा-रथ के ये दोनों पहिये हैं। इनके बिना धर्म का रथ चलेगा कैसे? परन्तु इस्लाम ने इन दोनों को ही समाप्त कर दिया है। इसलिये सारे मुस्लिम इतिहास में हिंसा और महिलाओं के प्रति अत्याचार को बढ़ावा मिला है।

इस विचार ने मनुष्य को अपराध करने का अधिकार दे दिया। यह व्यक्ति नहीं, विचार का परिणाम है। इस्लाम की मान्यता को सत्य सिद्ध करने के प्रयास को जाकिर नाईक के कथन में देखा जा सकता है। एक संवाद में जाकिर नाईक से प्रश्न किया गया है कि इस्लामी देशों में मन्दिर चर्च आदि क्यों नहीं बनाने दिया जाता, जबकि गैर मुस्लिम देशों में मस्जिद बनाने और उनकी परम्परा का पालन करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। इस पर नाइक का उत्तर है- यदि तीन व्यक्तियों को अध्यापक बनाने के लिये बुलाया गया हो और उनसे प्रश्न पूछा जाये कि चार और तीन कितने होते हैं? एक का उत्तर हो- चार-दो सात होते हैं, दूसरे का उत्तर हो, चार और चार सात होते हैं और तीसरे का उत्तर हो चार और तीन सात होते हैं। जिसका उत्तर ठीक होगा, उसे ही अध्यापक बनाया जायेगा, वैसे ही जो धर्म शत-प्रतिशत ठीक है, उसी को हमारे देश में स्थान दिया जाता है, दूसरे को नहीं। धर्म इनका, निर्णय भी इनका, परीक्षा की आवश्यकता नहीं। जब बिना परीक्षा के ही निर्णय करना है तो शेष लोगों का धर्म ठीक क्यों नहीं? आप कहते हैं- मेरा धर्म ही ठीक है, कहने से तो कोई ठीक नहीं होता, परन्तु इस्लाम में यही सिखाया जाता है। एक ही दीन ठीक है और उसे ही रहना चाहिये। दूसरे को संसार में रहने का अधिकार नहीं है।

जाकिर नाईक को आर्य समाज ने सदा ही चुनौती दी है। लिखित भी, मौखिक भी। वह 'आप और हम दोनों मूर्ति पूजक नहीं हैं' कहकर पीछे हट जाता है। जाकिर नाईक दूसरों की मान्यता पर तर्क करता है, प्रश्न उठाता है, परन्तु इस्लाम पर प्रश्न उठाने को अनुचित कहता है। वह हिन्दू धर्म पर चोट करते हुये कहता है- 'जो शिव अपने बेटे गणेश को नहीं पहचानता, वह मुझे कैसे पहचानेगा।' परन्तु पैगम्बर द्वारा अंगुली से चाँद के दो टुकड़े करने को ठीक मानता है।

वह धर्म की रक्षा के लिये मानव बम बनकर शत्रु को नष्ट करने को उचित ठहराता है। जब कोई आतंकवादी देशद्रोही सेना के हाथों मारा जाता है, तो उससे पीछा छुड़ाने के लिये कहा जाता है- आतंकी का कोई धर्म नहीं होता। फिर उसकी अन्तिम यात्रा धार्मिक रूप से क्यों निकाली जाती है? हजारों लोग उसे श्रद्धाञ्जलि क्यों देते हैं? उसके लिये जन्नत की कामना क्यों करते हैं?

इस्लाम में दोजख का भय और जन्नत का आकर्षण इतना अधिक है कि सामान्य व्यक्ति भी अपराध के लिये प्रेरित हो जाता है। जन्नत में हूरें, शराब, दूध की नदियाँ, वह सब जो इस दुनिया में नहीं मिल सका, जन्नत में मिलेगा। केवल उसे पैगम्बर का हुकुम मानना है। उसे पता है- जीवन चाहे जैसा हो, यदि वह एक काफिर को मार डालता है, तो उसे जन्नत बख्शी जायेगी। कुछ जो उस मनुष्य ने संसार में चाहा, परन्तु उसके भाग्य में नहीं था, फिर वह सब कुछ जन्नत में इतनी सरलता से पा सकता है, तो वह क्यों नहीं प्राप्त करना चाहेगा।

इसी प्रकार दोजख का भय भी एक मुसलमान को कोई दूसरी बात सोचने से भी डराता है। उसे सिखाया जाता है- जो कुरान को न माने, पैगम्बर को न माने, वह काफिर है, उसकी सहायता करना गुनाह है, अपराध है और अपराध का दण्ड दोजख है। कुरान में लिखा है- 'जो लोग ईमान लाते हैं, अल्लाह उनका रक्षक और सहायक है। वह उन्हें अन्धेरे से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है। रहे वे लोग, जिन्होंने इन्कार किया, तो उनके संरक्षक बढ़े हुये सरकश हैं, वे उन्हें प्रकाश से निकाल कर अन्धेरे की ओर ले जाते हैं। वे ही आग (जहन्नुम) में पड़ने वाले हैं।' (२.२५७, पृ. ४०)

जिसे अल्लाह मार्ग दिखाये, वह ही मार्ग पाने वाला है और वह जिसे पथ-भ्रष्ट होने दे, तो ऐसे लोगों के लिये उससे इतर तुम सहायक नहीं हो पाओगे। कयामत के दिन

हम उन्हें औंधे मुँह इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि वे अन्धे, गूंगे और बहरे होंगे। उनका ठिकाना जहन्नुम है। जब भी उसकी आग धीमी पड़ने लगेगी, तो हम उसे उनके लिये और भड़का देंगे। (१७.९७, पृ. २४७)

यदि कोई मुसलमान अपने धर्म का त्याग करे, तो उसके लिये कहा गया है-

और तुम में से जो कोई अपने दीन से फिर जाय और अविश्वासी होकर मरे, तो ऐसे लोग हैं, जिनके कर्म दुनिया और आखिर में नष्ट हो गये और वही आग (जहन्नुम) में पड़ने वाले हैं। वे उसी में सदैव रहेंगे। (२:२१७, पृ. ३३)

जहन्नुम जिसमें वे प्रवेश करेंगे, तो वह बहुत ही बुरा विश्राम-स्थल है। यह है, उन्हें अब इसे चखना है- खौलता हुआ पानी और रक्त-युक्त पीप और इसी प्रकार की दूसरी चीजें, यह एक भीड़ है, जो तुम्हारे साथ घुसी चली आ रही है। कोई आरामगाह उनके लिये नहीं, वे तो आग में पड़ने वाले हैं। (३८:५६-५८, पृ. ४०५)

भला इस परिस्थिति में इस्लाम के मानने वाले में कहाँ से इतना साहस आयेगा कि वह गैर-मुस्लिम की सहायता करने की सोचे।

इस प्रकार के इन धार्मिक आदेशों के कारण इस्लाम जहाँ अन्य सम्प्रदायों के साथ समन्वय नहीं कर पाता, वहीं इस्लाम में जो सत्तर से अधिक प्रशाखायें हैं, उनमें भी परस्पर इसी प्रकार का संघर्ष देखने में आता है।

मुसलमान किसी भी देश में वहाँ के संविधान का पालन करने में समर्थ नहीं है। यदि वे किसी गैर-मुस्लिम देश में हैं, तो वह 'दारुल हरब' है। उसमें रहकर उन्हें उस देश को 'दारुल इस्लाम' बनाना है, यह उसका धार्मिक कर्त्तव्य है। और एक मुसलमान के लिए देश, समाज, परिवार से ऊपर धर्म है, अल्लाहताला का हुक्म है। फिर वह कैसे किसी संविधान का आदर करेगा? कैसे उसको मान्यता देगा? यह वैचारिक संघर्ष उसे कभी शान्ति से बैठने नहीं देता, यही देश की अशान्ति का मूल कारण है। भारतीय संस्कृति कहती है- मनुष्य मनुष्य का रक्षक होना चाहिए, प्राणिमात्र की रक्षा की जानी चाहिये। वेद मनुष्य मात्र को परमेश्वर का पुत्र कहता है, रक्षा करने का उपदेश देता हैं।

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः
पुमान् पुमान्सं परिपातु विश्वतः।।

- धर्मवीर

ऋषि मेला २०१६ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला ४,५,६ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१६ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य: - १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाईयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक इस्लाम-इस्लाम का वैदिक स्वरूपः- यह ठीक है कि पूरे विश्व में मुसलमानों का एक वर्ग जिहाद, आई एस आई एस आदि कई नामों से पृथकवाद, घृणा, अलगाववाद व हिंसा के प्रसार में पूरी शक्ति से लगा है। इस्लाम शब्द का अर्थ शान्ति है, परन्तु जहाँ केवल मुसलमान ही बसते हैं वहाँ क्या शान्ति हो सकती है। शान्ति की प्राप्ति सम्भव है, यदि इस प्रयोजन की सिद्धि के लिये इस्लाम के मूल ग्रन्थ कुरान पर गम्भीर चिन्तन करके एकता व शान्ति के सूत्र खोजे जावें।

कुरान में एक आयत में स्पष्ट कहा गया है कि कभी सारी सृष्टि में एक धर्म व एक मर्यादा थी। मनुष्य के मार्ग भ्रष्ट होने से नये-नये मत पंथ बन गये। सब बखेड़ों का यही तो कारण हो गया।

एक इस्लामी विद्वान् साहित्यकार की एक लोकप्रिय पुस्तक का मैंने गत कुछ वर्षों में अनेक बार पाठ किया है इसके स्वाध्याय से मुझे ऐसे लगा कि यह पुस्तक यदि इस्लाम की सच्ची शिक्षा देती है तो इसे 'वैदिक इस्लाम' कहा जाना चाहिये। इसे हम इस्लाम का वैदिक स्वरूप भी कह सकते हैं। यही मानवी एकता व विश्व शन्ति का कल्याणकारी मार्ग है।

मेरे मन में आया कि इस पुस्तक के मुख्य-मुख्य बिन्दुओं को प्रसारित करने के लिए एक पुस्तक लिख दी जाये। इसकी सहस्रों-लाखों प्रतियाँ भारत व भारत से बाहर वितरित की जायें। यह वैदिक इस्लाम विज्ञान विरोधी नहीं होगा। यह अंधविश्वासों से मुक्त होगा। यह व्यक्ति केन्द्रित नहीं होगा। इसके मुख्य-मुख्य सिद्धान्त हैं-

१. लेखक का मत है कि मजहब हर युग में एक था। धर्म अनादि काल से एक था। एक है और एक रहेगा। इस युग में ऋषि दयानन्द जी ने क्रान्ति का शंखनाद फूंकते हुए मुख्य रूप से यही तो कहा था। लेखक का मत है कि मानवीय प्रकृति वही है जो सृष्टि के आरम्भ में थी। पाप-पुण्य की कसौटी भी हैफिर धर्म भी पाप-पुण्य की ही व्याख्या मात्र का नाम है। वह कैसे बदल सकता है?

लेखक धर्म के विकास व हर युग में नये मजहब की आवश्यकता के विचार को मिथ्या मानता है।

२. लेखक इस बात का भी खण्डन करता है कि दया आरम्भ में निर्दयता का नाम था। विकास वाद की प्रक्रिया से निकल कर क्रूरता करुणा में-निर्दयता दया का रूप धारण कर लेती है। इसे लेखक मिथ्या कल्पना मानता है।

३. लेखक ईश्वरीय न्याय को कयामत के दिन तक नहीं टालता। प्रभु प्रतिपल न्याय करता है। यह वैचारिक क्रान्ति है। इस्लाम वेद के द्वार से दूर कहाँ रहा। वैदिक धर्म की चौखट पर अब इस्लाम पहुँच गया है। उठो एक दूसरे को गले लगा लो।

४. अल्लाह ने आज तक किसी दुष्कर्मी के पाप-कर्म क्षमा नहीं किये। यही कर्म फल सिद्धान्त है। ऋषि दयानन्द ने ईश्वरकी दया व न्याय को पर्याय बताया है।

५. अल्लाह का स्वभाव कतई नहीं बदलता। ऋषि दयानन्द डंके की चोट से ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को अनादि बताते रहे।

६. लेखक मुसलमानों के इस अंधविश्वास का खण्डन करता है कि ''हमारा काम पाप करना हे और अल्लाह का काम क्षमा करना है।'' लेखक कहता है कि यदि अल्लाह न्यायकारी है तो फिर उसका कर्त्तव्य बनता है कि वह न्याय करे। लेखक यह भी लिखता है कि ''मनुष्य पाप कर्म करने के पश्चात् दण्ड से बच नहीं सकता।'' आओ! इस वैदिक इस्लाम का स्वागत करें। मित्रों! पं. लेखराम, पं. चमूपति का जय-जयकार करो। इन्हीं के पुण्य प्रतापका यह मधुर फल है।

७. लेखक पाप व दण्ड का-दुःख का चोली दामन का साथ मानता है। महान दार्शनिक दर्शनानन्द का भी यही घोष है।

८. लेखक पैगम्बर मुहम्मद की इस उत्कृष्ट इच्छा का भी उल्लेख करता है कि मेरा बारम्बार बलिदान हो और बारम्बार जन्म हो। यही तो पुनर्जन्म है।

९. लेखक मानता है कि मनुष्य को उसके परिश्रम का (कर्मों) का पूरा पूरा समुचित फल मिलेगा।

१०. लेखक की अन्तःवेदना यह है कि लाखों लोग कबर पूजा में फँसे हैं । करोड़ों पीरों के (गुरुडम) जाल में फँसे हैं। कुछ केवल आस्था को मुक्ति का साधन मानते हैं। सत्य व असत्य का विवेक ही नहीं रहा।

ये दस बिन्दु आज दिये हैं। मुझे विश्वास है कि मेरी इस नई पुस्तक से हलचल मचेगी। अंधविश्वास तो हिन्दुओं

में भी कम नहीं। म.प्र. के मुख्य मन्त्री जी को हमने कुम्भ स्नान से मुक्ति पाने, पुण्य कमाने की दुहाई देते सुना। यह क्या अंधविश्वास को बढ़ावा नहीं था?

यह क्या कर रहे हो? यह क्या हो रहा है?:- यह यशस्वी राष्ट्रीय कवि प्रो. तिलोकचन्द जी महरूम का प्रसिद्ध पद्य है। अमरोहा से छपने वाले एक पाक्षिक आर्य सामाजिक पत्र के एक नये अंक में वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ की एक अभूतपूर्व योजना की ओर मेरा ध्यान खींचा गया तो तत्काल महरूम जी की उपरोक्त पंक्तियाँ मेरे अधरों पर उतर आईं। मेरा मन आहत हुआ। इससे हृदय पर गहरी चोट लगी। जो आर्य समाज वेद शास्त्र की दुहाई देकर ईश्वर व जीव का सीधा सम्बंध बताता रहा है, वह आर्य समाज जो जन-जन को यह सीख देता रहा कि जो करेगा सो भरेगा और जिसका मूलभूत सिद्धान्त यह रहा कि कर्म का फल कर्त्ता को ही मिलेगा। अब वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यों को पोपों की पगदण्डी पर ले जाने लगा है।

ला. इच्छराम, चौधरी पीरुसिंह और चौ. जुगलाल कैसे धर्मात्मा व धर्मवीर बने? सारा आर्य जगत् जानता है। मुगला डाकू आर्य विद्वानों का यही उपदेश सुनकर तो बदला था कि पाप कर्म व पुण्यकर्म का फल कर्त्ता को ही मिलेगा। पाप पुण्य का भागीदार कोई दूसरा नहीं होता। महात्मा बुद्ध का प्रसिद्ध वैदिक उपदेश भी तो यही था:-

भिक्षुओं! बुद्ध तो केवल मार्ग दिखाने आया था। चलना तो आपको ही होगा। इस विषय के वेद मन्त्रों के कितने प्रमाण दें? ''स्वाध्याय सन्दोह'' पढ़ लीजिये या The call of the Vedas अथवा ''वेद प्रवचन'' व ''श्रुति सौरभ'' का पारायण करके जान लीजिये। सन्ध्या, हवन, स्वाध्याय मैं करूँगा तो पुण्य मुझे प्राप्त होगा। आत्म शुद्धि, कल्याण, निर्माण के लिये सन्ध्या, हवन, जप, तप, सेवा साधना मुझे आप ही करनी होगी।

रोजड़ आश्रम वाले इतने लम्बे समय से यम, नियमों का प्रचार करते चले आ रहे थे। योग शिविर लगाकर एक इतिहास बना रहे थे। अब हमें यह प्रलोभन दे रहे हैं कि आप घर में भले ही यज्ञ न करिये। रोजड दान भेज कर यज्ञ हवन का पुण्य प्राप्त करिये। इसका क्या अर्थ हुआ? जैसे कभी योरूप में किए गये व न किये गए (जो आगे हो सकते थे) पापों के लिये पोप से क्षमा पत्र क्रय करके लोग स्वर्ग में सीट पक्की करवाते थे। वही कुछ वानप्रस्थ साधक आश्रम के हमारे माननीय आचार्यों व योगियों को सूझा है। अब जो घरों में यज्ञ करते भी हैं, वे भी छोड़ते जायेंगे। जब रोजड़ साधक आश्रम यज्ञ हवन की बिक्री कर ही रहा है तो फिर On line की आधुनिक व्यापार पद्धति छोड़कर कोई बाज़ार में धक्के क्यों खावें?

लूथर ने पोप को चुनौती देकर योरुप को बचाया। हम अपने योगियों को कैसे समझावें? सोये हुए को तो हम जगा सकते हैं, जागे को कौन जगावे? कल को यम नियमों व अष्टांग योग से भी छुट्टी मिल सकेगी। स्वामी सत्यपति जी अकेले ही हमारे लिये यम-नियमों का पालन कर देंगे। सन्ध्या भी रोजड़ में ही हो जाया करेगी।

करवा चौथ को पाखण्ड बताने वाले यज्ञ-व्यापार आरम्भ करके भयङ्कर भूलकर रहे हैं। यह आत्मघाती मार्ग है। श्री स्वामी सत्यपति जी ने एक लम्बे समय तक जो कर्मफल सिद्धान्त का प्रचार किया-उनकी उस सारी सेवा पर पानी फिर जायेगा।

पूज्य पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी ने लिखा है कि पञ्च महायज्ञों का करना प्रत्येक व्यक्ति का अनिवार्य कर्त्तव्य है। इसमें किसी के लिये विकल्प (Option) नहीं है। आप अपने आपको उपाध्याय जी की कोटि का विचारक नेता व विद्वान् से आगे व ऊपर मत समझें। महात्मा आनन्द भिक्षु जी जैसे तपस्वी यज्ञ हवन करने की प्रेरणा देकर भक्तों से हवन करने की प्रतिज्ञा करवाया करते थे ऋषि जी ने अपने हाथ से गायत्री मन्त्र लिख-लिखकर भक्तों को कण्ठाग्र करवा कर गायत्री जप का प्रचार किया। आचार्य उदयवीर जी के कृषक पिता को महाराज ने गायत्री दीक्षा क्यों दी? उन्हें गायत्री जप करवाने की फीस देने की प्रतिज्ञा करवा लेते। मेरे निवेदन पर विचार करके भूल सुधार करिये।

आर्यजगत् में श्रद्धाराम पर छपा अनर्थकारी लेख:- मान्य पं. इन्द्रजित् देव जी, यमुनानगर ने इन्हीं दिनों पं. श्रद्धाराम पर आर्य जगत् में प्रकाशित श्री हरिकृष्ण निगम का भ्रामक व तथ्यहीन लेख भेजा है। सम्पादक के रूप में सब पत्रों पर किसी का नाम होता ही है, परन्तु अब आर्यसमाजी पत्रों के पास डॉ. हरिशंकर शर्मा, पं. पद्मसिंह, पं. विष्णुदत्त, श्री वजीरचन्द व पूज्य प्रेम जी सरीखे सम्पादक कितने हैं? इस लेख के लेखक श्री निगमजी किस संस्था व मत पंथ के लिए लिखते हैं, यह मुझे पता नहीं है। लगता है कि हिन्दू धर्म के नाम पर प्रचलित प्रत्येक अंधविश्वास आपकी दृष्टि में प्राचीन भारतीय हिन्दू धर्म है। श्रद्धाराम जी रचित आरती का मूल स्वरूप क्या निगम जी जानते हैं? 'आरती' शब्द वैदिक है क्या? दुखिया की पुकार आरती

है। उपासना, प्रार्थना, जप, योग साधना क्या आरती है या गद्गद् होकर उपासक की विनय व उपासना है? निगम जी और आर्यजगत् वाले 'आर्याभिविनय' में महर्षि की गद्गद् होकर प्रभु को पुकारने वाली विनय तो कभी देखें। श्रद्धाराम की आरती में 'ठाकुर तुम मेरे' में ठाकुर से क्या भाव है? वैदिक साहित्य में आर्यजगत् के संचालक मालिक ठाकुर पूजा का कोई प्रमाण तो दें। भारत सरकार द्वारा प्रकाशित श्रद्धाराम जी की जीवनी में तो जय जगदीश हरे प्रथम पंक्ति है 'ओम् जय जगदीश हरे' इसका क्या भाव हुआ? ओम् व हरे की संगति? 'भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे' क्या यह गीत, वेद शास्त्र के अनुसार सत्य मान्यता है? कर्म का फल सुख दु:ख भोगे बिना क्षण भर में दूर होते देखा है कभी? श्री रामचन्द्र जी माता सीता के वियोग में विलाप करते हुए वन के मूक पशुओं-जन्तुओं से माता सीता का पता पूछते हैं। श्री राम के सङ्कट क्षण में दूर न हुए तो हमारे कैसे होंगे? 'मैं मूर्ख खलकामी' 'मैं कुमति' यह क्या भक्ति भजन हैं? जीव अल्पज्ञ तो है, परन्तु कुमति व खलकामी तो..........

एकात्मता का निगम जी का प्रचारक, अमृत वर्षा करने वाले श्री निगम जी का श्रद्धाराम घोर नास्तिक, ईश्वर-निन्दक, वेद-निन्दक था। उसका पं. गोपीनाथ के नाम लिखा अन्त समय कापत्र उसकी जीवनी में पढ़िये। उसकी मृत्यु के पश्चात् छपा उसका ग्रन्थ ''सत्यामृत प्रवाह'' क्या कभी देखा है? यह अनूठे विद्वान् जी अनूठे तो थे, परन्तु भाई परमानन्द जी इतिहासकार के अनुसार गोरे पादरियों के वेतन भोगी लेखक थे।

गप्पें गढ़कर लिखने की श्री निगम की क्या विवशता है, यह वही जानें। उनकी आँखों के सामने लाहौर, अमृतसर व लुधियाना हिन्दू धर्मच्युत होते गये। ऋषि दयानन्द ने पंजाब आकर धर्म रक्षा अभियान चलाया। श्रद्धाराम ने क्या नीलकण्ठ शास्त्री प्रख्यात् पादरी का सामना किया। उसने महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र को ईसाई बनाकर लन्दन पहुँचा दिया।

श्रद्धाराम ने पैसे लेकर यह गीत रचा:-

ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया, ईसा मेरा राम रमैय्या।
ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।।

यह है आपके एकात्मता के प्रचारक की देन, जिसे आप लोग छिपाते हैं। श्रद्धाराम निराश, हताश व दुखिया के रूप में संसार से गया। उसने अपने जीवन को बर्बाद हुआ माना। उसने पूरी शक्ति से ऋषि दयानन्द का प्रचण्ड विरोध किया, परन्तु महर्षि के विरोध करने पर भी पछताया। उसका ऋषि के नाम लिखा पत्र क्या निगम महाराज ने पढ़ा है? मूल पत्र परोपकारिणी सभा में आकर पढ़ लें। आँखें खुल जायेंगी।

'इतिहास की साक्षी' पुस्तक परोपकारिणी सभा से मँगवाकर उसका आप एक बार पाठ करें। सत्य का बोध हो जायेगा। श्री श्रद्धाराम ने विदेशी सरकार की बहुत सेवा की, यह हम मानते व जानते हैं। 'हिन्दू हृदय' के नाम पर बहकाना छोड़िये। कुछ धर्म रक्षा भी कीजिये। श्रद्धाराम ने क्या-क्या लिखा? आपको इतना भी पता नहीं है। उसने सरकार के लिये भी लिखा। एक बार ऋषि दयानन्द के नाम लिखा श्रद्धाराम का पत्र आर्यजगत् में भी आप छपवा दें। पत्र हम दे देंगे। पत्र परोपकारिणी सभा की सम्पत्ति है। 'हिन्दू संस्कृति' के रक्षक क्या इसके प्रसार का साहस करेंगे? कोई प्रश्न पूछता हो तो हम आपके प्रश्नों का स्वागत करेंगे। शेष कभी फिर।

एक विकृत ऋषि जीवन:- दिल्ली से छपे एक ऋषि जीवन के प्रकाशक तथा लेखक दोनों में से कौन प्रदूषण अथवा मनगढन्त कहानियों के लिए दोषी है, अभी यह कहना कठिन है। आश्चर्य का विषय है कि दिल्ली के समाजों व लीडरों ने इस दिशा में कोई पग नहीं उठाया। किन्हीं कारणों से परोपकारिणी सभा के मन्त्री व विद्वान् भी रविवार का दिन होने से दिल्ली जाकर प्रकाशक से न मिल पाये। अब इस विषय में कुछ किया जायेगा।

उस पुस्तक में लिखा है कि महर्षि को विष दिया गया तो जोधपुर का महाराज भागा-भागा ऋषि का पता करने पहुँचा। लेखक को यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हो गया। काशी के कोतवाल श्री रघुनाथ का नाम इस पुस्तक में क्या छपा है? यह पढ़कर आश्चर्य होता है। अनूपशहर के तहसीलदार को भी नया नाम दिया गया है। टंकारा के मन्दिर की घटना व कर्णसिंह द्वारा ऋषि पर तलवार के वार की कहानी भी बदल दी गई है। और क्या-क्या लिखें। न जानें आर्य समाज के संस्थापक पर वार-प्रहार की छूट सबको कैसे मिल गई है। पहले भारत सरकार द्वारा प्रकाशित राजेन्द्र टोकी की श्रद्धाराम पर लिखी पुस्तक में निराधार मिथ्या गप्पें गढ़कर ऋषि पर वार किया गया है।

उत्तर देना सीखो:- विभिन्न मत-पंथों व लेखकों द्वारा महर्षि की निन्दा के लिये सब पुस्तकों का उत्तर स्व. श्री लक्ष्मण जी ने ''निष्कलंक दयानन्द'' पुस्तक के रूप में दिया था। महात्मा नारायण स्वामी जी ने उसका प्राक्कथन

लिखा। मित्रों के कहने पर मैंने उसका हिन्दी अनुवाद भी कर दिया। प्रसार-प्रचार करने के लिए तो व्यक्ति, विद्वान् और सभा संस्थायें कुछ करें, आगे आयें तो ऋषि जीवन की रक्षा हो।

'इतिहास की साक्षी' पुस्तक में अलभ्य स्रोतों के प्रमाण देकर परोपकारिणी सभा ने भारत सरकार की पुस्तक का प्रतिवाद कर दिया। समाजें वाह! वाह! ही करके चुप बैठ गई। ऐसे साहित्य को सब वक्ता व विद्वान् पढ़ेंगे तो भविष्य में ऋषि जीवन की रक्षा कर पायेंगे। उत्तर कैसे देना है? इसकी भी एक शास्त्रीय विधा है। नई पीढ़ी के वक्ता व विद्वान् ऋषि जीवन विषयक ऐसे साहित्य पर अधिकार प्राप्त करेंगे तो बात बनेगी। और अधिक क्या लिखें?

डॉ. रामप्रकाश जी का नूतन ग्रन्थः- समाज सुधार, वेदोद्धार विषय पर गिने चुने विद्वानों के खोजपूर्ण मौलिक लेखों को संग्रहीत व सम्पादित करके डॉ. रामप्रकाश जी ने एक पठनीय ग्रन्थ तैयार किया है। यह स्थायी महत्त्व का ग्रन्थ होगा, यह सबको मान्य है। आपका श्रम वन्दनीय है। हम भी इस ग्रन्थ की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ऋषि जीवन पर विचारः- डॉ. कुशलदेव जी ने नासिक, मुम्बई में ऋषि के आगमन की नई तिथियां दे दीं। अपनी पुस्तक में अपनी जानकारी के स्रोत का पता न दिया। हमने उनके श्रम को जानते हुए उनकी दी तिथियाँ स्वीकार कर लीं। उनसे स्रोत की जानकारी लेने का अवसर ही न मिला। मान्य कुशल देव चल बसे। हमें जो नये दस्तावेज हाथ लगे, उनसे तो पं. लेखराम जी आदि गवेषकों की दी गई तिथियों की पुष्टि होती है। पाठक हमारे नये ग्रन्थ की प्रतीक्षा करें।

वीराङ्गना माता माणिक कँवरः- २८ जून को सभा मन्त्री जी के साथ श्री इन्द्रजीत् देव तथा यह सेवक शाहपुरा गये। प्रातः से सायँ तक हम सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहे। राज परिवार से, वयोवृद्ध आर्य श्री सोहनलाल शारदा व अनेक आर्यों से भेंट की। क्रान्तिवीर प्रतापसिंह बारहठ का दर्शनीय स्मारक देखा। सभा ने सहयोग का आश्वासन दिया। ऋषि भक्त इस क्रान्तिकारी परिवार की वीराङ्गना माणिक कँवर व वीर प्रताप सिंह ने निधन से पूर्व यह वसीयत की कि ऋषि दयानन्द के मन्तव्य के अनुसार उनकी अस्थियाँ गंगा में न भेजीं जायें। खेतों में भस्मि बिखेरी जाये। ऋषि के साथ इस परिवार का पत्र व्यवहार स्मारक में प्रदर्शित होता रहेगा। **- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६**

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय

दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता

उपशीर्षक

१. महर्षि दयानन्द का विशिष्ट दार्शनिक चिन्तन
२. महर्षि दयानन्द का ईश्वरविषयक चिन्तन
३. ईश्वर एवं ब्रह्म, ईश्वर/ब्रह्मस्वरूप, कर्तृत्व
४. महर्षि दयानन्द का जीव विषयक चिन्तन (जीव का स्वरूप, संख्या, परिमाण, सादि-अनादि, जीव-ब्रह्म सम्बन्ध, अंशांशिभाव, जीव-जगत् सम्बन्ध, जीव का कर्तृत्व एवं भोक्तृत्व, मुक्ति में जीव का स्वरूप, जीव के मौलिक गुण, जीव-आत्मा-जीवात्मा)
५. महर्षि दयानन्द का जगत् विषयक चिन्तन
६. मध्यकालीन आचार्यों (शङ्कर एवं रामानुज) केसाथ दयानन्द के दार्शनिक विचारों की तुलना
७. स्वर्ग/मोक्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ -

१. संहिता
२. उपनिषद
३. षड्दर्शन
४. दयानन्द दर्शन - डॉ. वेदप्रकाश गुप्त-मेरठ
५. दयानन्द दर्शन - डॉ. श्री निवासशास्त्री - कुरुक्षेत्र वि.वि.
६. त्रैतवाद का उद्भव और विकास-डॉ. योगेन्द्रपाल शास्त्री
७. आदर्श त्रैतवाद-राजसिंह भल्ला -सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली
८. महर्षि दयानन्द विरचित ग्रन्थ
९. जीवात्मा - गंगाप्रसाद उपाध्याय-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली
१०. आत्मदर्शन - महात्मा नारायण स्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र.सभा-दिल्ली
११. आस्तिकवाद-पं. गंगाप्रसादउपाध्याय-घूडमल प्रहलादकुमार - हिण्डौन
१२. मृत्यु और परलोक म. नारायणस्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली
१३. अनादि तत्त्व-पं. चमूपति
१४. वैदिक स्वर्ग- पं. चमूपति
१५. महर्षि दयानन्द के दार्शनिक मन्तव्य-डॉ. कर्मसिंह आर्य
१६. ईश्वर प्रत्यक्ष -पं. मदनमोहन विद्यासागर
१७. ईश्वरसिद्धि-डॉ. श्रीराम आर्य
१८. महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र व्यवहार-परोपकारिणी सभा, अजमेर

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

इस शिविर में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, निदेशक- दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात का सानिध्य प्राप्त होगा।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

Yajnyopaveeta and Yajnya

Sudhir Anand

Yajnyopaveeta Ceremony is usually described as an initiation ceremony where a Hindu child or young adult begins one's spiritual learning with a teacher and starts to wear a thin consecrated cord. The cord is composed of three cotton strands which symbolize three debts that one must never forget. The first debt is to one's teachers (guru or deva rin), those who have taught and given knowledge and virtuous values to the wearer. The second debt is to one's parents and family (pitri rin), those who have nurtured the wearer at home. The third debt is to sages and scholars (rishi rin), those who have given us scriptures, knowledge and wisdom over the ages, which now enlighten and enrich everybody's life in the society. The yajyopaveeta is also called Janeu and by other names in various regions of India. While this understanding is important, the significance of Yajnyopaveeta **is much deeper as described below.**

A person who wears Yajnyopaveeta **makes a** commitment to do Yajnya in life. **One may then ask, What is Yajna (also spelled Yagya)?** Yajna is performing virtuous karmas at all three levels: thoughts, words and deeds as well as helping others achieve the same goal. **The Yajnyopaveeta is sacred only because it reminds us that we must at all times perform yajnya in life, otherwise it is just a cord containing three cotton strands. The Yajnyopaveeta is worn on the left shoulder and directed to the right waist. Along the way, as Yajnyopaveeta crosses the chest it passes in front of the heart, symbolically indicating that the resolutions that accompany this thread are taken seriously with a caring, loving and kind heart and a resolute mind for success.**

Yajya by most lay persons in Indian culture is usually thought of as performing a fire ceremony by lighting fire in the Hawan Kund **and chanting select mantras, however, the fire ceremony is a very limited part of the Yajya and called** Havan, Homa or Agnihotra. **True Yajya as stated earlier is virtuous conduct in all aspects of life and spreading the same message to others.** The physical fire lighted during the ceremony is a reminder that we should kindle and enlighten our soul i.e. our inner spiritual self. **Also just as the physical fire in Havan Kund by burning ghee and samagri (mixture of fragrant and medicinal herbs and incense) purifies and brightens the surrounding environment, similarly we should first purify and enlighten ourselves by doing virtuous deeds, and then do selfless deeds as a service for the community as well as make the community a better and more virtous place for all.**

The true yajnya as per the Vedas, Brahman Granths, Upanishads and Geeta is the virtuous conduct of life's journey so that it gets closer to God and eventually attains God realization. Shatpat Brahman **states that** Yajya wai shreshtamam karma **i.e. virtuous karmas i.e. yajnya are the most important thing in life. In Geeta, Yogeshwar Krishna says the following to Arjuna about yajnya:** Shreyan dravyamayad yajnyat jnanayajnah parmatapa **(Gita 4:33).** Paramtapa **(O! Arjuna)** jnanayajnah **(knowledge, educating others, virtuous conduct)** is shreyan **(superior to)** dravyamayad yajnat **(the yajnas performed with physical materials). Contrary to the correct view stated above, many Hindus have the blind faith that the ritul of sitting before the holy fire (agni) and putting oblations into the fire**

would please God and fulfill most desires of the worshipper. God is Omniscient and cannot be fooled. **He is not deceived by the bribes of empty rituals unless the yajnya is accompanied by improvement in the conduct of life. Such yajnyas only purify the ambient environment depending upon the incense and herbs burnt but not much more.**

The root word for yajnya is yaj **which according to Sanskrit dictionary has three meanings:**

1. Devpuja which means honoring devas **i.e. the word Deva means those persons who are always doing good for mankind and the universe. They are the embodiment of virtue or dharma. They are generous selfless persons; they give to others without expecting anything in return. People such as they deserve honor and respect and are considered godly or saintly persons. Depending upon the context besides generous noble persons, father, mother, respected elders and physical entities such as space, fire, air, water and earth because of their helpfulness to mankind are also called deva. In many Veda mantras,** God is also called Deva because God is always giving to all beings without even their asking, God is the Giver to all givers.

2. Sangatikaran which means keeping company of virtuous noble persons and reading scriptures that promote truth. **Organized group religious activities and ceremonies in Vedic Dharma (and Hindu religion) are called** Satsang. This Sanskrit word literally means the company or gathering of truth seekers and truth followers. **This gathering can be at a temple, some other place of worship or a person's home as long as the purpose is to promote God, truth and dharma.** We learn from each other and are likely to follow the habits and customs of the company we keep. It is at a Satsang where one is likely to hear an inspiring sermon, find a guru or meet a peer devotee. **In his simple, yet descriptive words, Kabir said the following about Satsang:**

The company of the good and wise is like fragrance emanating from a perfumery, Wisdom comes like the fragrance, whether one is a perfume buyer or a passerby.

3. Daan which means donating for worthy causes. In the Vedas and other Hindu scriptures there is much emphasis on being generous and giving to others **(Rig Veda 1:29:4; Rig Veda 10:117:6; Atharva Veda 3:24:5; and 20:74:4). In Sanskrit, giving (charity) is called daan (or danum), and it is usually grouped into three categories called tana, mana and dhana. Tana is giving in the form of bodily or physical service. Mana is giving at mental or word level and dhana is monetary or material giving. All three types of giving are praiseworthy and noble, and depending upon the circumstances, one may be more important than the others. The most difficult form though, is selfless (volunteer) service at the physical level. An example would be to tend to the physical needs of an invalid person unknown to you or to bring food to the hungry. The next level of selfless giving is to provide mental support, such as counselling or encouraging someone, giving a lecture or writing a book to inspire others or promote virtue. The last level is donating money or gifts to charitable organizations so that others can take care of people's needs is the easiest of the three types of donations, even though in most societies, it receives the most recognition. A few caveats about giving (charity) include:** Give only to deserving people or causes in a selfless manner with no desire for fame or recognition. And, donations of ill gotten money to atone for one's sins in not virtuous.

Vedas place great emphasis not only on being generous, but also on working together with other persons for the welfare of all human beings. **Most of the prayers in the Vedas are for "us" rather than for "me", with great deal of emphasis on being generous and sharing with others, this allows one to receive God's blessing. While one should make all possible effort in making personal physical, mental and spiritual progress in life,** one should never be completely satisfied in one's personal progress only, but should also make an effort for the physical, mental and spiritual well being of the society at large. **The last sukta (hymn) of Rig Veda has four mantras, in which God instructs human beings to think, discuss and work together for the betterment of mankind. One Veda mantra from this hymn states the following:**

Sam gachachhadhvam sam vadadhvam sam vo manamsi janatam.

Deva bhagam yatha poorvay samjanana uapasatay. (Rig Veda 10: 191: 2)

God's Message to human beings, listen!

(Sam gachachhadhvam) **May you move ahead together, united to do good deeds,** (sam vadadhvam) **may you speak with one united voice,** (sam vo manamsi janatam) **may your minds and thoughts be united for pursuit of truth and common good. (**yatha poorvay deva **Just as in the past sages and generous people** (samjanana) **united in thoughts, words and actions that are based on truth** (bhagam uapasatay) **have worshipped God and pursued fulfillment of worthy personal and societal goals.**

This Veda mantra is a message from God to all human beings and states that, just as in the past deva i.e. sages and generous persons united in thoughts, words and deeds (that are based on truth), have worshipped God and pursued fulfillment of worthy personal and societal goals, so should you. May all of you move ahead united to do good deeds for others, may all of you speak with one united voice, and may all of your minds and thoughts be united for pursuit of truth and common good.

Maharshi Dayanand Saraswati in his books describes five types of yajnyas one must do.

1. Brahma Yajnya **is a daily individual (personal) meditation called Eeswar-Stuti-Prarthana-Upasana, Sandhya or Sandhya Yog-Upasana.**

2. Deva Yajya **i.e. Havan or Agnihotra is a group activity including family and others as described earlier.**

3. **Pitri Yajya is serving with devotion one's living mother, father and family elders.**

4. Balivaishvadeva Yajya **is offering food and taking care of helpless human beings and other beings e.g. animals, birds who are dependent on us.**

5. Atithi Yajya **is honoring and serving learned virtuous guests who visit us.**

As stated earlier, the ultimate purpose of all yajyas in life as per the Vedas and related scriptures is attainment of God realization. **You may ask how does Yajnyopaveeta cord ties in with that? In Sanskrit the word sootra has many meanings, it can mean a thread, string, cord, root or integral rules etc. while the Veda mantras are in the form of a poetry which has a profound meaning, all six Darshanas including Yoga Darshanam are in the form of sootras. The word sootra in English is usually translated as aphorisms which means 'a terse saying embodying a general truth; i.e. a short sentence with a deep meaning.' Therefore, the most important thing to remember is that while the Yajnyopaveeta has three strings symbolizing three debts as stated in the first paragraph,** in reality Yajnyopaveeta is only one

cord which symbolically reminds the wearer that he/she with his/her heart and soul must always stay connected with Omnipresent God just like a foetus is connected to his/her mother with an umbilical cord for nourishment. **God as described in the following Veda mantra is called** sootram sootrasya **i.e.the root source of all true knowledge (also see Arya Samaj's First Principle) and the definition of a truly learned person is one who intricately knows God.**

Yo vidyat sootram vitatam yasmin otah praja emha.

Sootram sootrasya yo vidyat sa vidyat brahmanam mahat. **(Atharva Veda 10: 8: 37)**

(Yo) **That person is learned** (vidyat) **who learns and know** (vitatam sootram) **the root/ integral rules or ultimate particles/strings** (yasmin) **by which** (otah praja emha) **all created things in the universe are thoroughly made up of.**

(yo) **That person however is truly learned** (vidyat) **who learns and comes to know** (Sootram sootrasya) **the root source of the above described root rules for ultimate particles/strings because** (sa) **he/she** (vidyat) **knows** (brahmanam mahat) **God who is the Greatest in the universe.**

The ceremony in which the Yajnyopaveetam is given to a child is also called Upanayanam which means (Upa+Nayanam) connecting the soul of the child with that of the teacher and God and opening the spiritual eye by imparting knowledge to see the world in its true reality. After an Upanayanam ceremony and learning the child is also called dvija i.e. twice born. **Although, orthodox Hindu Brahmins forbid girls and women from reading and learning the Vedas or wearing Yajnyopaveetam, beginning with Maharshi Swami Dayanand Ji, Arya Samaj has promoted both the learning of the Vedas and wearing the Yajnyopaveetam for girls and women just like boys and men.**

You may finally ask what are the benefits of wearing a Yajyopaveeta and becoming a dvija? **The rewards according to the Vedas are as follows:**

Stuta maya varda vedmata prachodyantam pavmani dvijanam

Ayum pranam prajam pashum kirtim dravinam brahmvarchasvam.

Mahayam datva vrajat brahmlokam.

(Stuta maya varda vedmata) **I have learnt Vedas with a great degree of respect for them (like I would honor my mother) and adopted the message of the Veda mantras in my life because they give boons** (dvijanam) **to twice born, i.e. those who learn and practice the message of the Vedas in their lives,** (prachodyantam pavmani) **they become inspired and their thoughts and actions become pure and virtuous.**

The rewards of living according to the messages of the Vedas are the following seven items which together constitute true prosperity:

(Ayum) **Long life,** (pranam) **vitality, strength,** (prajam) **virtuous family and progeny,** (pashum) **animal wealth for milk and agriculture,** (kirtim) **fame,** (dravinam) **wealth and prosperity,** (brahmvarchasvam) **spiritual enlightenment.** (Mahayam datva) **Finally God says that do not become attached to or lost in these rewards, I gave them to you, give them back to me by sharing with others,** (vrajat brahmlokam) **so you may acquire moksha i.e. very prolonged bliss.**

Ceremonial and Pledge Mantras for Wearing a Yajnyopaveeta

Om Yajnyopaveeta

Om Yajnyopaveetam paramam pavitram prajapateryatsahjam purastat.

Ayushyamagryam pratimunch shubram yajnyopaveetam balamastu tejah.

Yajnyopaveetamasi yajnyasya tva yajnyopaveetenopanahyami.

Yajnyopaveeta is sacred because God who is the Master of all (and has existed before everything else) inspires us that we should wear Yajnyopaveeta to remind ourselves of performing yajnya i.e. in our lives. In this manner, by performing virtuous deeds we should aim at a long life full of prosperity, benevolence, strength and radiance. I wear this Yajnyopaveeta which is worth adopting and make a commitment to perform Yajnya in life i.e. having noble thoughts, words and deeds as well as spreading the same message to others.

Om Agnay vratpatay vratam charishyami tat shakayam tanmay radhyatam.

Idamaham anritat satyam upaimi. **(Yajur Veda 1:5).**

(Agnay) **Our Ultimate Leader, Supreme Light that enlightens us,** (vratpatay) **Judge and the Master Keeper of all vows,** (vratam) **as I take a solemn vow,** (charishyami) **please bless me so that,** (tat shakayam) **I may fulfill my vow** (tanmay) **and that my vow** (radhyatam) **may be successful.** (Idam aham) **with Thy blessing I now pledge** (anritat) **to reject all falsehood** (satyam upaimi) **and adhere to truth for the rest of my life.**

Dear God You are Our Ultimate Leader, Supreme Light that enlightens us, and the Master Keeper of vowsbecause all creation abides by Your universal rules. Even God follows His own rules and does not break them to pease devotees. We on the other hand due to our fears, laziness or other defects often break our vows. Dear God, give me Your blessing so that by Your Grace I may be successful in fulfilling my pledge to always uphold the truth and to avoid falsehood in all aspects of my life.

Om Punantu maa devajanaah punantu manasaa dhiyah.

Punantu vishvaa bhootaani jaatvedah puneehi maa.

Dear God, You and the learned noble persons present here may direct and inspire my mind and intellect so that I may do good and virtuous deeds in life. O Almighty! You know the deeds of all beings, please give me Your blessings, enlightenment and love, as well as help me to become a virtuous person.

- Los Anjils, U.S.A.

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३३ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- १६ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन ६ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेद वागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ४, ५, ६ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ४ नवम्बर को परीक्षा एवं ५ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१६ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३३ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- आचार्य बलदेव जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर,आचार्य विजयपालजी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी, कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी - शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री

लह धर्म्म सनातन देशाटन अनुहारी।।
लखि भारत को अति हीन मलीन भिखारी।
उपदेश यथावत दियो बेग विस्तारी।।
सुन लाखन जन तन मन धन बुद्धि संवारी।
दौड़- महाराज, आर्य्यकुल-कमल-दिवाकर,
मेदपाट, सिरमौर सज्जनसिंह, महाराणा निज निकट बुलाय।
मनुस्मृति, पढ़ी सब बिदुर प्रजागर ध्यान लगाय।।
वायोगी को कछु दरस्यो योग मंझारी।
महाराज, कह्यो मम जीतेजी जिमि संरक्षण हो,
मृत्यु व्यतीते है सर्वस तुमको अधिकार।
यही दक्षिणा, वेद विद्या का जहं तहं होय प्रचार।।
दोहा- त्रयोविंशति भद्रजन हैं मुझको स्वीकार।
संस्कार मम देह को कीजो विधि अनुसार।।
चौपाई- अगर तगर कर्पूर मंगइयो, वेदी रच कर यज्ञ करैयो।
गाड़ियो न जल मांहि बहइयो, ना कहुं कानन में फिकवैयो।।
छंद- चार मन घृत मँगाकर पुनि तपा स्वच्छ छनाइयो,
चिता चन्दन पूरियो दो मन अवश्य हि लाइयो।
काष्ठ दश मन चुन जुगत से दग्ध तन करवाइयो,
वेदमन्त्रों की ऋचा उच्चारते मुख जाइयो।।
वा कर्म-क्रिया को सबकी रूचि उमगी है।
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है।। १।।

सुनियो अब भारतवर्ष दयानन्द को है,
जो परोपकारिणी सभा रची वह यह है।
महिमहेन्द्र फतेहसिंह उदय-सूर्य चमको है,
संरक्षण पद निज धीर वीर धारो है।।
उपसभापति पद मूलराज थरप्यो है,
कविराज मंत्री श्यामलदास बन्यो है।
इक द्वितीय मन्त्री को पद शेष रह्यो है,
दौड़- महाराज, पंडिया मोहनलालजी, विष्णुलालजी, मथुरावासी,
उपमन्त्री पद हृदय लगाय।
धारण कीन्हों, कार्य्यवाही करते नित प्रेम बढ़ाय।
अष्टादश मुख्य सभासद सुन्दर सोहें,
महाराजाधिराजा नाहरसिंह शाहपुराधीश,
अजमेर बगीचो, दियो आश्रम हेत चढ़ाय।
ताम्रपत्रिका सुघड़ बनवाय, करी अर्पण लिखवाय।।
दोहा- अजयमेरु उत्तर दिशा अन्नासागर पाल।
या सम बड़ी न भूमिका घाट-भूमि को थाल।।
चौपाई- धन्य धरनि सरबर बड़भागी,
धन्य क्षेत्र पुष्कर अनुरागी।।
का य दयानन्द स्वामी त्यागी,
पुनः नींव आश्रम की लागी।।
छंद- मध्य भू खुदवा गढ़ा अनुमान ले इक ताल को,
कर दियो प्रारम्भ कछु दरसा पुरातन चाल को।
अस्थि लेकर मसूदापति सौंप मोहनलाल को,
इक रुदन दूजो हर्ष है वरनूं कहा या हाल को।।
उस महर्षि की मानसी अग्नि सुलगी है,
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है।। २।।
प्रतिवर्ष सभा जुड़ आ इत सुमति उपावे,
कोइ प्रतिनिधि युत अपनो सन्देश भिजावे।
रावत अंसीद अर्जुनसिंह वर्मा आव,
वेदला तख्तसिंह राव राय पहुँचावे।।
महाराजा श्री गजसिंह विचार प्रगटावे,
श्रीमान् राव श्री बहादुरसिंह हरखावे।
स्वामी हित पूर्ण प्रेम प्रीति दरसावे,
दौड़- महाराज नृपति महाराणाजी श्री फतेहसिंह जी देलवाड़ा,
लिखो नाम मैं देऊं गिनाय,
सुपरिन्टेन्डेट, सु पंडित सुन्दरलाल विचार जनाय।
जयकृष्णदास जी.सी.एस.आई. बतलावे,
महाराज, कलेक्टर डिप्टी जो बिजनौर,
और लाहौर के सांईदास कहाय।
जगन्नाथजी फर्रुखाबादी दुर्गासहाय आय।।
दोहा- कमसरियेट गुमाश्ता छेदीलाल मुरार,
सेठ जु निर्भयरामजी कालीचरण उचार।
चौपाई- राव गुपाल देशमुख मेम्बर,
महादेव गोविन्द जज्जवर।
दाना माधवदास अकलवर,
पण्डित श्यामकृष्ण प्रोफेसर।।
छंद- सभासद ऊपर कहे है, सभा परउपकारिणी।
वैदिक सुशिक्षा दे बनी है, अवश्य देश सुधारणी,
आर्यवर्त अनाथ दीनों के जो कष्ट निवारिणी।।
दयानन्द की भक्त बन स्वीकार प्रति विस्तारिणी,
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है।। ३।।
स्वीकार पत्र के वचन सभा बरतावे
यदि उचित होय तो नियम घटाय बढ़ावे।।
सम्मतिसब आर्य्यसमाजों से मँगवावे

सम्भव हो सो कर पृथक् और ठहरावे।।
वैदिक-यंत्रालय को हिसाब अजमावे
श्रद्धायुत चन्दा निज-निज करन चढ़ावे।।
त्रय सभासदों से अधिक न घटने पावे।
दौड़- महाराज जहाँ लगि उनके पद पर सभ्य भद्रजन,
धर्मध्वजी वा आर्यपुरुष कोई नियत न थाय।
पक्षपात तज अधिक पक्षानुसार बहु रचें उपाय।।
श्री सभापति की सम्मति द्विगुण मिलावे।
महाराज त्याग सब विरोध जो कुछ झगड़ा,
टंटा उपजे बाको आपस में लेवें निबटाय।
न्यायालय की हो सके तहाँ तलक नहीं गहें सहाय।।
दोहा- स्वामी दयानन्द लिख गये अन्त समय यह पत्र।
तेहि प्रण पूरण करन हित सभा होइ एकत्र।।
चौपाई- धन्य दयानन्द श्रुति पथ चीन्हो,
भारत हित तन मन धन दीन्हो।
धन दृष्टान्त कह्यो सो कीनो,
मन वच काय सुयश जग लीन्हो।।
छन्द- अजमेर केसरगंज में चटसाल यह बनवायगी,
राज-भाषा संस्कृत जिसमें पढ़ाई जायगी।
करहु चंदा सकल जन मिलि लाभ यह पहुँचायेगी,
विदेशन विद्या गई जो बहुरि घर को आयगी।।
इक धर्म वृद्धि कहे जेठू सदा सगी है।
श्री दयानन्द-आश्रम की नींव लगी है।। ४।।

चेतावनी

बिन कारण वैर अरु निंदा को, मत कीजिये सज्जन आपस में,
अभिमान तजो सन्मान लहो, कछु ज्ञान विचारो अंतस में,
जंह-तंह रहो प्रीति बढ़ा करके, मन धरिये धीरज अरु जस में,
यह अर्ज करे सोढा जेठू, मद लोभ, क्रोध रखिये बस में।।

सद्गुरु की महिमा

सद्गुरु की वाणी, अमृत रस का प्याला।
पी प्रेम ध्यान से रहे न गड़बड़ झाला।।
पहचान उसे जो तुझ को चेताता है।
जैसा जो कुछ तूं करे वो भुगताता है।।
लखि रचना क्यों कर्ता को विसराता है।
अज्ञान नास्तिक कैसे कहलाता है।।
वह अन्तर्यामी घट-घट का रखवाला। पी प्रेम.।।१।।
गुरु ऐसा कर जो सदा रहे ब्रह्मचारी।
उपदेश करे जैसा वो बर्त्ते सारी।।
विद्या वृद्धि हित करे तपस्या भारी।
दे सत्या-सत्य जताय भक्त हितकारी।।
कण्ठित हो चतुरवेद मन्त्रों की माला। पी प्रेम.।।२।।
गुरु प्रथम निरंजन, प्रणाम बारम्बारा।
प्रणवूं पुनि ब्रह्म ऋषिन वच सुपथ संवारा।।
वेदानुकूल आचरण सभी को प्यारा।
जो यथायुक्त धारे वह गुरु हमारा।।
दे खोल हृदय के अन्धकार का ताला। पी प्रेम.।।३।।
गुरु मात पिता, आचार्य्य अतिथि कहलावे।
गुरु परोपकार हित अपनी देह तपावे।।
गुरु दयानन्द सा बीड़ा कौन उठावे।
को वेद भाष्य की घर-घर कथा सुनावे।।
यों कहें नमस्ते जेठू भोला भाला।
पी प्रेम ध्यान से रहे न गड़बड़ झाला।।४।।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ जुलाई २०१६ तक)

१. श्रीमती निर्मला, हिसार, हरियाणा २. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ३. श्री देवमुनि, अजमेर ४. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ५. श्री वरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ६. श्री किशोर काबरा, अजमेर ७. श्रीमती उमा सोनी, अजमेर ८. श्री कमलनयन शर्मा, गाजियाबाद, उ.प्र. ९. श्रीमती उर्मिला देवी, नई दिल्ली १०. श्री कमल गोयल, अजमेर ११. श्री कन्हैयालाल कबाड़ी, अजमेर १२. श्री मुकेश कुमार आर्य, नई दिल्ली १३. श्री शंकरलाल, जयपुर, राज. १४. श्री चन्द्रभानु बडगुजर, गुडगांव, हरियाणा १५. श्री रणजीत सिंह आर्य, नई दिल्ली १६. श्री पवन कश्यप व श्रीमती नेहा कश्यप, जोधपुर, राज. १७. श्रीमती मीना सोनी, जोधपुर, राज. १८. श्री अनंगपाल सिंह, टोंक, राज. १९. श्री बालेश्वर मुनि, अजमेर २०. श्री इन्द्रजीत् देव, अजमेर २१. श्री शिव कुमार चौधरी, इन्दौर, म.प्र. २२. सुश्री श्रुति चौधरी, इन्दौर, म.प्र. २३. मास्टर अरनव अग्रवाल, इन्दौर, म.प्र. २४. श्री रवि व श्रीमती ऋचा अग्रवाल, इन्दौर, म.प्र. २५. सुश्री अन्नया अग्रवाल, इन्दौर, म.प्र. २६. श्रीमती प्रेरणा चौधरी, इन्दौर, म.प्र. २७. श्रीमती सुषमा चौधरी, इन्दौर, म.प्र. २८. श्री श्रेयस्कर चौधरी, इन्दौर, म.प्र. २९. सुश्री श्रेयसी चौधरी, इन्दौर, म.प्र. ३०. मास्टर सुविज्ञा चौधरी, इन्दौर, म.प्र. ३१. श्री माँगीलाल गोयल, अजमेर ३२. श्री प्रभुलाल कुमावत व श्रीमती मीना कुमावत, किशनगढ़, राज. ३३. डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी, नई दिल्ली ३४. श्रीमती चन्द्रकला, ब्यावर, राज. ३५. डॉ. सरिता स्वामी व श्री देवेन्द्र स्वामी, जयपुर, राज. ३६. श्रीमती कान्ता व श्री श्याम सुन्दर राठी, दिल्ली ३७. सुश्री स्वरिता शर्मा, अजमेर ३८. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली ३९. श्री रमेश मुनि, अजमेर ४०. श्री अंकुर भार्गव व सुवरचा भार्गव, बंगलौर ४१. श्रीमती शशि भार्गव, अजमेर ४२. श्री प्रवीण कुमार व श्रीमती पिंकी सरन, इंग्लैण्ड ४३. श्री कौशल, इंग्लैण्ड ४४. श्रीमती रचिता व विनीत, इंग्लैण्ड ४५. श्री अमित अग्निहोत्री व श्रीमती अनिता, इंग्लैण्ड ४६. श्रीमती सुधा अग्रवाल व श्री रमेश अग्रवाल, इंग्लैण्ड ४७. विजयलक्ष्मी गुरुकुल, छोटीपुरा ४८. श्री रघुवीर मुनि, धौलपुर, राज. ४९. डॉ. रूपचन्द, लखनऊ, उ.प्र. ५०. श्री महेशचन्द्र एडवोकेट, जयपुर, राज. ५१. श्री प्रभुलाल, किशनगढ़ ५२. श्री अजय सांगवान, झज्जर, हरियाणा ५३. श्री कुलदीप आर्य, झज्जर, हरियाणा ५४. आचार्या आदेश, गुडगाँव, हरियाणा ५५. श्री सुभाष आर्य, हिसार, हरियाणा ५६. श्री राजेश पाण्डे, हिसार, हरियाणा ५७. श्री आनन्द मुनि, हिसार, हरियाणा ५८. राजीव यादव, बीकानेर, राज. ५९. मुमुक्षु मुनि, अजमेर ६०. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर ६१. श्रीमती सुशीला देवी, नगरा, अजमेर ६२. श्री ओमप्रकाश तापड़िया, कोटा, राज. ६३. श्री गोपाल प्रसाद यादव, अजमेर ६४. मेहता माताजी, अजमेर ६५. टी.एम. उद्योग, पाली, राज. ६६. श्री अभिषेक शर्मा, जोधपुर, राज. ६७. ममता व वन्दना, विजयनगर ६८. श्री रंजन हाण्डा, नई दिल्ली।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ जुलाई २०१६ तक)

१. ऋषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट, हरियाणा २. श्री शान्ति स्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ३. श्री अनुज मिश्रा, अजमेर ४. श्री उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ५. श्री वरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. ६. श्रीमती उमा सोनी, अजमेर ७. श्रीमती तरुणा

गहलोत, अजमेर ८. श्री देवदत्त , अजमेर ९. अरविन्द कुमार, इलाहाबाद, उ.प्र. १०. श्री चन्द्रसेन हरिसिंघानी, अहमदाबाद, गुजरात ११. श्री हर्ष कुमार आर्य, अलीगढ़ १२. दीपा कोरानी, अजमेर १३. श्री कपिल कुमार आर्य, अलीगढ़, उ.प्र. १४. श्रीमती कामायनी, अजमेर १५. डॉ. अनिल व श्री सुनील गोयल, अजमेर १६. श्री सुभाष नवाल, अजमेर १७. अनिल शर्मा, अजमेर १८. श्री भैरुसिंह कच्छावा, अजमेर १९. दर्शन्या लोकेश, नोएडा २०. श्री करम मुनि, रेवाड़ी, हरियाणा २१. श्री राजकुमार, रोहतक, हरियाणा २२. हंसमुनि योगार्थी, नारनौल, हरियाणा २३. साम्भलू मित्रा, गोरखपुर, उ.प्र. २४. श्री ललित कुमार, यमुनानगर, हरियाणा २५. श्री कैलाशचन्द गर्ग, जयपुर, राज. २६. श्री अंशुमान, दिल्ली २७. श्री फतह सिंह मानव, उदयपुर, राज. २८. श्री अतुल कुमार गुप्ता, अलवर, राज. २९. श्री मोहनलाल तँवर, अजमेर ३०. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ३१. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर ३२. श्रीमती मिथलेश, सत्येन्द्रसिंह आर्य, अजमेर ३३. श्री रजनीश बँसल, नई दिल्ली ३४. श्री विपिन कीर्ति लाखोटिया, बैंगलोर ३५. श्री हेमसिंह आर्य, बाड़मेर, राज. ३६. श्री ऋषि मोहन, जयपुर, राज. ३७. श्री ओमपाल आर्य, अजमेर ३८. श्री माँगीलाल राव, अजमेर ३९. श्रीमती प्रेमलता मुंदडा, मन्दसौर, म.प्र. ४०. श्री विजयसिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर ४१. मुमुक्षु मुनि, अजमेर ४२. श्री अमृत तनेजा, दिल्ली ४३. श्री कैलाशचन्द शर्मा, अजमेर ४४. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर ४५. श्री कपिल सोनी, पाली, राज. ४६. आर्य मेडिकल स्टोर, बीकानेर, राज.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

वैशेषिक दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में '**महर्षि कणाद**' द्वारा प्रणीत '**वैशेषिक दर्शन**' का **आचार्य श्री सत्यजित्** जी द्वारा सितम्बर-२०१६ के प्रथम सप्ताह से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ५-६ महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क सूत्र - आचार्य सत्यजित् जी - ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.) **ई-मेल** - styajita@yahoo.com

जिज्ञासा समाधान – ११५

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा– नमस्ते, मेरी निम्न जिज्ञासा है कृपया शान्त करने की कृपा करें।

यज्ञ के प्रकार –

१. मनुष्य जितने भी कर्म (मन, वचन, कर्म) करता है उन्हें बचपन से लेकर मृत्यु पर्यन्त अच्छी भावना से तथा बगैर राग द्वेष के करे वे सभी यज्ञ कहाते हैं। इस विषय में महर्षि दयानन्द जी द्वारा विस्तार से कब,कहाँ, कैसे बतलाया है?

२. अग्निहोत्र यज्ञ– पंच महायज्ञ के विषय में महर्षि जी द्वारा ऋग्वेद भाष्य में विस्तार से बताया गया है इस विषय में कुछ विद्वानों का मत है कि इसमें घी सामग्री की आहुतियाँ देकर इन यज्ञों का जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। कृपया समाधान करने की कृपा करें।

३. वर्तमान समय में धर्मगुरुओं में ये भावना घर कर गई कि महर्षि जी इतने विद्वान् नहीं थे जितने हम हैं कृपया इस पर विस्तार से मार्ग दर्शन करनेकी कृपा करें।

– देवपाल आर्य, देव दयानन्द आश्रम, लालूखेड़ी, डा. अलीपुरखेड़ी, जनपद मुजफ्फरनगर– २५१३०१ उ.प्र.।

समाधानः– (क) यज्ञ एक उत्तम कर्म है जो कि सकल जगत् के परोपकारार्थ किया जाता है। यज्ञ का अर्थ केवल अग्निहोत्र ही नहीं है। महर्षि दयानन्द जी ने यज्ञ के विषय में विस्तार से लिखा है। महर्षि लिखते हैं– ''यज्ञ उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभगुणों का दान अग्निहोत्रादि जिसने वायु, वृष्टि, जल, औषधी की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना है, उसको उत्तम समझता हूँ।'' (स.प्र. स्वमन्त. प्र. २३)

२. ''यज्ञ अर्थात् उत्तम क्रियाओं का करना।''

– ऋ. भा. भू.

इन दोनों स्थानों पर महर्षि ने इस यज्ञ का वर्णन सब जीवों को सुख पहुँचाने रूप में और जो उत्तम क्रियाएँ हैं वे सब यज्ञ हैं इस रूप में किया है। ये क्रियाएँ अच्छी भावना से की जाती है। कुछ अच्छी क्रियाएँ अन्य भावना से अर्थात् लोक में प्रसिद्धि की भावना से अथवा किसी ने कुछ बड़ा अच्छा कार्य किया कोई व्यक्ति उसे बड़े कार्य करने वाले को हीन दिखाने के लिए उससे बड़ा अच्छा कार्य कर सकता है। कहने का तात्पर्य है कि सदा अच्छी भावना से ही तथा बिना राग द्वेष के ही सब अच्छे कार्य होते हों ऐसा नहीं है फिर भी ऐसा न होते हुए भी वे अच्छे कार्य यज्ञ कहला सकते हैं।

दूसरी ओर अच्छी भावना होते हुए भी दोष युक्त कार्य हो जाते हैं, ऐसे कार्य यज्ञ नहीं हो सकते। इसलिए जो भी प्राणी मात्र के परोपकारार्थ किया कार्य है यज्ञ ही कहलायेगा। और भी महर्षि दयानन्द इस यज्ञ को विस्तार पूर्वक समझाते हुए लिखते हैं। ''......अर्थात् एक तो अग्निहोत्र से लेके अश्वमेधपर्यन्त,दूसरा प्रकृति से लेके पृथिवी पर्य्यन्त जगत् का रचनरूप तथा शिल्पविद्या और तीसरा सत्सङ्ग आदि से जो विज्ञान और योग रूप यज्ञ हैं।'' ऋ. भा. भू.। इस पूरे संसार में परमेश्वर द्वारा यज्ञ हो रहाहै परमेश्वर की व्यवस्था से सूर्य इस संसार का सदा शोधन कर रहा हे, चन्द्रमा औषधियों में रस को पैदा कर यज्ञ कर रहा है, ये सब संसार की व्यवस्था यज्ञ ही है। वैज्ञानिकों द्वारा शिल्प विद्या से नई–नई खोज कर हम मनुष्यों के सुखार्थ दी जा रही हैं यह महर्षि को दृष्टि से यज्ञ ही तो हैं। सत्संग से ज्ञान विज्ञान को बढ़ाना यज्ञ ही है, योग्भ्यास से आत्मोत्थान करना यज्ञ ही है। ये कहना अयुक्त न होगा कि सब श्रेष्ठ कार्य यज्ञ ही कहलाएंगे।

(ख) पाँच महायज्ञों का विधान वैदिक विधान है। वैदिक मान्यता प्राणीमात्र के सुखार्थ है। भला ऐसा कैसे हो सकता है कि वैदिक मान्यतानुसार किया गया यज्ञ जीवन पर कोई प्रभाव न डाले। ऐसा मानने वाले कि यज्ञ में दी गई आहुतियों का जीवन पर प्रभाव नहीं पड़ता वे नास्तिक ही कहलाएंगे। महर्षि दयानन्द के अनेकों प्रमाण इस विषय पर मिलते हैं, यज्ञ में दी गई आहुति कितनी सुखकारी है ये सब वर्णन महर्षि ने अनेकत्र किया है। इस विषय में महर्षि के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं–

१. जो मनुष्य से प्राणियों को सुख देते हैं, वे अत्यन्त सुख को प्राप्त होते हैं। – यजु. भा. १८.५१

२. जो मनुष्य आग में सुगन्धि आदि पदार्थों को होमें, वे जल आदि पदार्थों की शुद्धि करने हारे हो पुण्यात्मा होते हैं और जल की शुद्धि से ही सब पदार्थों की शुद्धि होती है, यह जानना चाहिए। - य. २२.२५

३. जो मनुष्य यथाविधि अग्रिहोत्र आदि यज्ञों को करते हैं, वे पवन आदि पदार्थों के शोधने हारे होकर सबका हित करने वाले होते हैं। - य. २२.२६

४. जो यज्ञ से शुद्ध किये हुए अन्न, जल और पवन आदि पदार्थ हैं वे सब की शुद्धि, बल, पराक्रम और दृढ़ दीर्घ आयु के लिए समर्थ होते हैं। इससे सब मनुष्यों को यज्ञ कर्म का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए। - य. १.२०

५. मनुष्यों को चाहिए कि प्राण आदि की शुद्धि के लिए आग में पुष्टि करने वाले आदि पदार्थ का होम करें।

६. मनुष्य लोग अपनी विद्या और उत्तम क्रिया से जिस यज्ञ का सेवन करते हैं उससे पवित्रता का प्रकाश, पृथिवी का राज्य, वायुरूपी प्राण के तुल्य राजनीति, प्रताप, सब की रक्षा, इस लोक और परलोक में सुख की वृद्धि परस्पर कोमलता से वर्तना और कुटिलता का त्याग इत्यादि श्रेष्ठ गुण उत्पन्न होते हैं। इसलिए सब मनुष्यों को परोपकार और अपने सुख के लिए विद्या और पुरुषार्थ के साथ प्रीतिपूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।

ऐसे-ऐसे सैकडों प्रमाण महर्षि के वेद भाष्य में हैं जो यह प्रतिपादित कर रहे हैं कि यज्ञ में दी गई आहुतियों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। आज का आधुनिक विज्ञान भी इसकी विशेषता को स्वीकार करता है। आज यज्ञ से रोग दूर हो रहे हैं, जिस बात को महर्षि ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में लगभग १४१ वर्ष पूर्व कहा था।

''आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत-सा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यवर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाये।'' - म.प्र. स. ३

यहाँ महर्षि ने यज्ञ से रोगों के दूर होने की बात कही है, जिसको कि आज का विज्ञान भी स्वीकार करता है। आज अनेकों परीक्षण यज्ञ पर हुए हैं जिनका परिणाम सकारात्मक आया है।

राजस्थान सरकार की ओर से अजमेर में जवाहर लाल नेहरु मेडिकल कॉलेज में रोग के कीटाणुओं के ऊपर यज्ञ का क्या प्रभाव पड़ता है इसका परीक्षण हुआ जिसका प्रभाव अत्यन्त सकारात्मक आया। डॉ. विजयलता रस्तोगी जी के निर्देशन में यह शोध हुआ था। इस शोध की रिपोर्ट परोपकारी पत्रिका में भी छपी थी। इतना सब होते हुए कोई कैसे कह सकता है कि यज्ञ का हमारे जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह तो कोई निम्न सोच वाला ही कह सकता है।

(ग) महर्षि दयानन्द कितने विद्वान् थे इसका प्रमाण पत्र क्या अविद्या की साक्षात्मूर्ति तथा कथित धर्मगुरु देंगे? महर्षि को विद्वान् का प्रमाण पत्र इन वर्तमान के धर्मगुरुओं से नहीं चाहिए। महर्षि की विद्वत्ता को पक्षपात रहित विद्वान् ही जान सकता है, इनकी विद्वत्ता को ये अपनी पूजा कराने वाले और पाखण्ड फैलाने वाले क्या जाने?

काशी शास्त्रार्थ में एक ओर उस समय के प्रकाण्ड पण्डित स्वामी विशुद्धानन्द, बाल शास्त्री, शिवसहाय, माधवाचार्य आदि सत्ताईस-अट्ठाईस विद्वान् दूसरी ओर इन सबको धूल चटाने वाला विद्या का सागर अकेला महर्षि दयानन्द था। उस दिन इन धर्मगुरुओं के आदर्श पण्डितों ने काशी शास्त्रार्थ में ऋषि दयानन्द की विद्वत्ता का लोहा माना था। महर्षि दयानन्द की विद्वत्ता व साधुपने से प्रभावित होकर राधा-स्वामी मत के प्रमुख 'हजुर साहिब' ने ऋषि दयानन्द की जीवनी लिखी थी। महर्षि की विद्वत्ता के कारण आज कुरान और बाईबल की आयतों के अर्थ बदल गये। पौराणिकों के पारिभाषिक शब्दों के अर्थ बदल गये। उनकी विद्वत्ता के कारण ही कोई मत सम्प्रदाय का अनुयाई शास्त्रार्थ में जीत नहीं पाया। महर्षि के विचारान्दोलन के कारण ही आज कुम्भ में एक दलित को साथ लेकर स्नान किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द के विद्या विचार के कारण ही घर वापसी हो रही है। महर्षि की विद्या, तप, त्याग, ईश्वर समर्पण को देख सिंध प्रांत के प्रर्सिद्ध समाज सुधारक टी.एल. बास्वानी ने भक्ति भाव से ऋषि जीवन पर आधारित तीन पुस्तकें लिखी। विदेशी विद्वान् रोमा रोलां ने महर्षि के विषय में अपने सर्वोत्कृष्ट विचार लिखे। महर्षि दयानन्द कितने बड़े विद्या के भण्डार थे यह जानकारी उनके ग्रन्थ, वेद भाष्य, पत्र व्यवहार, उनका जीवन चरित्र ये सब दे रहें। फिर भी जिस किसी अल्प मति को अपना मत सम्प्रदाय रूपी व्यवसाय चलाना होता है तो वह प्राय: किसी बड़े व्यक्ति की आलोचना किया करता है कि जिससे उसकी दूकान चलने लग जाये। ऐसा ही वर्तमान का कोई-कोई धर्मगुरु कर रहा होगा। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्त्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

अदीना स्याम शरदः शतम्

-श्री गजानन्द आर्य, संरक्षक परोपकारिणी सभा

यह मंत्र का हिस्सा है, प्रसिद्ध मन्त्र इस प्रकार है-

ओम् तत् चक्षुःदेवहितं पुरस्तात् शुक्रं उच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं।
शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतं।
अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

- यजु. ३६/२४

बचपन से इस मन्त्र को पढ़ता तथा बोलता आया हूँ। घर में बच्चों का जन्मदिन होता है तो इस मन्त्र के साथ उनको आशीर्वाद भी देते रहे हैं। इस मन्त्र में प्रार्थना है कि सौ वर्ष तक हमारे सभी अंग-प्रत्यंग स्वस्थ रहें। हम स्वस्थ और आत्म निर्भर जीवन बिता सकें।

जैसे-जैसे मेरी आयु बढ़ती गयी, मेरी शारीरिक अवस्था क्षीण होती चली गयी। शरीर को कई शल्य चिकित्साएँ भोगनी पड़ीं। हर ऑपरेशन शरीर में कुछ जटिलताएँ ठीक करता है, तो कुछ नयी समस्याएँ बढाता भी है। शरीर की सभी इन्द्रियाँ शिथिल होती चली गयीं। कानों से सुनना कम हो गया, आँखों से दिखना बंद-सा हो गया। या यह कहूँ कि मेरा लिखना-पढ़ना सब बंद हो गया। एक नया अनुभव हुआ। मुझे ऐसा लगता है कि जब तनुष्य का अपने बाह्य माध्यमों से विचारों का आदान-प्रदान कम हो जाता है, तब उसका आंतरिक चिंतन-मनन बढ़ने लगता है। उसका सम्पूर्ण मस्तिष्क विचारों के मंथन में लगा रहता है।

मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। २०११ की बात है। मैं उन दिनों बैंगलोर में था। बीमारियों के कारण जीवन के बहुत सारे उतार चढ़ाव देख लिए थे। जीवन की सबसे भयावह स्थिति वह थी, जब बीमारियों का शिकार मेरा मस्तिष्क हो गया। मेरी स्मृति प्रायः चली गयी। मेरी बातों का कोई आधार या तारतम्य नहीं रहा। यहाँ तक कि मेरा व्यवहार भी मेरी आयु के अनुरूप नहीं रहा। ये सब बातें मुझे मालूम भी नहीं पड़ती, यदि मेरे पुनः ठीक हो जाने के बाद परिवार के सदस्य मुझे नहीं बताते। ईश्वर की कृपा से मैं मस्तिष्क में छाये उस अंधकार काल से बाहर निकला। धीरे-धीरे मैं अपने पुराने बौद्धिक स्तर पर पहुँचा।

मानसिक द्वंद्व के उस दौर में उपरोक्त मंत्र ने मुझे बहुत उद्वेलित किया। जीवन की इस घटना ने मुझे हर बात को, हर मंत्र को दोबारा सोचने के लिए प्रेरित किया। उसी काल में मैं उपरोक्त मंत्र की व्याख्या को समझने की कोशिश में लग गया। शब्दों के आधार पर मंत्र बहुत दुरूह नहीं है- पश्येम शरदः शतं। यानी हम सौ वर्षों तक देखें, जीवेम शरदः शतं यानी सौ वर्ष तक जीवित रहे, शृणुयाम शरदः शतं अर्थात् सौ वर्षों तक सुनने की शक्ति रहे; प्रब्रवाम शरदः शतं यानी सौ वर्ष तक बोलने की शक्ति बनी रहे; अदीनाः स्याम शरदः शतं यानी सौ वर्षों तक हम अदीन भाव से जिएँ। हमारे अंदर दीनता न हो; हमारे अंदर अधीनता न हो। यहाँ आकर मेरे चिंतन की सुई अटक गई । यह कैसे संभव है कि सौ वर्षों की आयु में कोई क्षीणता न हो; दीनता न हो? सौ वर्षों की आयु पाने वाला मनुष्य निश्चित रूप से परिजनों के सहयोग से ही जीवित रह सकता है। जब मानव जीवन की अवधि सौ वर्ष की है, तो क्या मृत्यु के समय तक कोई व्यक्ति बिना दीनता के रह सकता है? मुझे ऐसा लगने लगा कि इस मंत्र में ऋषियों का आशय यह नहीं रहा होगा। निश्चित रूप से ईश्वर की प्रार्थना में कहीं कोई गहरी बात छुपी हुई है। मेरा यह प्रश्न मेरे मस्तिष्क में बार-बार आता रहा।

एक बार बैंगलोर में मुझसे मिलने के लिए कई मित्र और विद्वत्गण मेरे निवास स्थान पर आए। मैंने अपना प्रश्न एक विद्वान् मित्र के सामने रखा। मैंने कहा- मुझे मंत्र के इस खंड में कोई छुपी हुई बात लगती है; मुझे ऐसा लगता है कि इसमें 'अदीना' शब्द शारीरिक दीनता के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ है, बल्कि इसमें हमारे अंदर छिपे हुए किसी खजाने की तरफ इंगित है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता? विद्वान् मित्र ने मेरी बात को गम्भीरता से नहीं लिया, उन्होंने कहा-मंत्र बहुत स्पष्ट है। इसमें किसी दूसरे अर्थ की कोई गुंजाइश नहीं है। फिर उन्होंने विनोद में मुझसे कहा कि आप चाहें तो अपने खजाने को खोजते रहिए।

विद्वान् मित्र ने शायद बहुत ही सहज भाव से, विनोद में मुझे उत्तर दिया था, फिर भी न जाने क्यों मुझे उनका विनोद मेरी गंभीरता के प्रति एक उपहास का भाव लगा। यह बात मन में कहीं खल गयी। मुझे लगा कि भले ही मैं उनके जैसा विद्वान् नहीं हूँ, फिर भी उन्हें मेरे ८० वर्ष के स्वाध्यायी जीवन को थोड़ा बहुत महत्त्व देना चाहिए था। इन सब बातों में संभवतः विद्वान् मित्र की तरफ से कुछ गलत नहीं हुआ था, लेकिन मुझे अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिल पाने के कारण मेरे मन में यह खिन्नता आई थी। इसके बाद मैंने किसी विद्वान् से अपने प्रश्न का उत्तर नहीं माँगा।

जैसे बुझी हुई आग के ऊपर भले ही राख की परतें पड़ जाती हैं, लेकिन उसके नीचे की सतह पर अग्नि बनी रहती है, उसी तरह सतही रूप से भले ही मैंने अपनी जिज्ञासा को अपने मन में कहीं दफना दिया था, लेकिन मेरा प्रश्न मेरे मस्तिष्क के अंदर कहीं कुलबुला रहा था। अब मैं ८६ वर्ष का हो गया हूँ, शारीरिक अक्षमता २०११ के बनिस्बत और अधिक बढ़ी है। देखना एक आँख में सिर्फ १० प्रतिशत बचा है, उसी तरह सुनना भी सिर्फ एक कान में उतना ही बचा है। चलने-फिरने के लिए सहारा लेना पड़ता है, फिर भी मस्तिष्क का चिंतन-मनन कम नहीं हुआ, शायद और अधिक बढ़ गया है। अंतर इतना है कि पहले मैं अपने विचारों को लिख दिया करता था, अब वह भी संभव नहीं रहा।

मेरा पुराना प्रश्न मेरे मस्तिष्क पर फिर हावी हो गया। मैंने बेटे महेन्द्र से फोन पर बात की। मैंने उससे कहा- देखो मेरे दिमाग में कुछ बातें हैं, जिन्हें मैं लिखवाना चाहता हूँ। क्या तुम कोई ऐसी व्यवस्था कर सकते हो कि कोई मेरे पास बैठकर मेरी बातों को सुने और फिर उन बातों को लिपिबद्ध कर दे? महेन्द्र ने कहा- मैं कुछ दिनों के लिए आपके पास आ जाता हूँ, आप अपनी सारी बातें मुझे कह दें, ताकि मैं उन्हें लिख सकूँ। महेंद्र कलकत्ता आ गया। अपने साथ एक नोट-बुक भी लाया है, जिसमें वह मेरी बातें लिखना चाहता है। हमारी पहली ही बैठक में उसने कहा-पिताजी आपके मन में विचारों का प्रवाह इतना तेज चल रहा है कि आपके बोलने की गति के साथ मेरा लिख पाना संभव नहीं है। फिर उसने एक तरकीब निकाली, उसने कहा कि उसके स्मार्टफोन में आवाज रिकॉर्ड करने का यंत्र है, इसलिए मैं अपनी बात धारा प्रवाह बोल सकता हूँ और वह बाद में उनको सुन-सुनकर लिख लेगा। महेन्द्र की तरकीब काम आ गई। उसने ३० मिनट में मेरा धारा प्रवाह भाषण रिकॉर्ड किया। उसके चार दिनों के प्रवास में मैं बार-बार उसे कुछ छुटी हुई बातें फिर बताता रहा, लेकिन अब उसे बार-बार रिकॉर्ड करने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि वह मेरा मुख्य आशय समझ गया था।

संध्या का एक मंत्र है जिसमें शरीर के सभी अंगों के लिए प्रार्थना की गई है-

ओं भूः पुनातु शिरसि, ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः ओं
स्वः पुनातु कण्ठे, ओं महः पुनातु हृदये,
ओं जनः पुनातु नाभ्यां, ओं तपः पुनातु पादयोः, ओं
सत्यं पुनातु पुनः शिरसि, ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

सिर, नेत्र, कंठ, हृदय, नाभि, पैर और पुनः सिर की चर्चा-इन अंगों के स्वस्थ रहने के लिए प्रार्थना की गयी है, लेकिन मेरी चर्चा के विषय में इनमें से आते हैं सिर्फ नेत्र, नासिका, मुँह और सिर। शरीर के किसी हिस्से में ईश्वर ने हमें कोई ऐसा खजाना दिया है, जिसकी रक्षा की प्रार्थना अदीनाः स्याम शरदः शतं में करते हैं।

ईश्वर ने विशेष ताकतें हर प्राणी को दी हैं। मनुष्य को सबसे अधिक दी हैं। जब मैंने प्राणियों के बारे में सूक्ष्मता से विचार करना शुरू किया तो मुझे बहुत ही दिलचस्प उदाहरण मिले। कभी आपने सोचा है कि अगर आप किसी मिठाई का छोटा-सा कण भूमि पर गिरा दें तो किस प्रकार चीटियों की कतार वहाँ पहुँच जाती हैं? न जाने कितनी दूर होती हैं वे चीटियाँ, लेकिन उन्हें इस मिठास का आभास कहीं से भी हो जाता है और फिर वे सही दिशा में चल पड़ती हैं। अगर हम उनके शरीर की बनावट को मनुष्य के समकक्ष तुलना करें तो मनुष्य का आकार उनसे लाखों गुना बड़ा होता है। इसका मतलब यह है कि वह जितनी दूरी अपने नन्हें-नन्हें पाँवों से चलकर आती है, वह दूरी मनुष्य के पाँव के आकार के अनुपात में शायद कई मीलों का सफर होगा। चींटी को ऐसी घ्राण शक्ति ईश्वर ने प्रदान की है।

बकरी के नवजात बच्चे को अगर पानी के तालाब में

फेंक दिया जाए तो वह डूबता नहीं। वह हाथ-पैर मार कर थोड़ी देर में तैरना सीख जाता है और किनारे तक पहुँच जाता है। गाय का बछड़ा जन्म लेने के साथ अपनी माँ को पहचानने लगता है, गायों के झुंड में वह अपनी माँ तक अपने-आप पहुँच जाता है।

इसी प्रकार प्रत्येक जीव के पास ईश्वर प्रदत्त कोई न कोई विशेष शक्ति होती है। पक्षियों की एक प्रजाति है जो एशिया के उत्तर भाग में- जिसे साइबेरिया भी कहते हैं, वहाँ पाई जाती है। वह भूभाग अत्यंत ठंडा है, लेकिन साल के कुछ महीनों में जब ठंड बहुत अधिक बढ़ने वाली होती है, तो वे पंछी झुंड के झुंड बनाकर उड़ते-उड़ते दक्षिण एशिया तक पहुँच जाते हैं। भारत में भी ये पक्षी मेहमान के रूप में आते हें, फिर अपनी नैसर्गिक समय सीमा पूरी करके स्वदेश लौट जाते हैं। जब जीव-जंतुओं के पास ऐसी दैवीय शक्तियाँ होती हैं तो क्या मनुष्य के पास ऐसी शक्तियों का भंडार नहीं होगा? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए मैंने उन मनुष्यों के बारे में सोचना शुरू किया जो अपना बहुमूल्य खजाना खो चुके थे।

मेरे गाँव में एक प्रौढ़ व्यक्ति थे। बहुत समझदार माने जाते थे। एक बार अचानक उनके मस्तिष्क में कोई बहुत बड़ी विकृति हो गयी। वह अपनी समझ पूरी तरह से खो बैठे। कपड़े उतार कर फेंक दिए, नग्न घूमते रहे। कहीं भी शौच कर दिया, कहीं भी मूत्र त्याग कर दिया। लोक-लाज से उनका कोई संबंध नहीं रहा। घरवालों ने परेशान होकर उन्हें जंजीरों से बाँधकर घर में कैद कर दिया। वहाँ भी उनकी हरकतें असह्य हो गईं। आखिरकार उन्हें एक पागलखाने में भेजा गया।

एक अन्य उदाहरण हमारे ही एक रिश्तेदार का याद आता है। एक बार अचेत होकर गिर गए। पता चला, उन्हें बहुत गंभीर पक्षाघात हो गया है। उनका पूरा शरीर शिथिल हो गया, साँसों का आना-जाना चलता रहा, लेकिन मुँह से बोलना संभव नहीं रहा। आँखें अपलक देखती रहीं। घर के लोग अपनी इच्छा अनुसार उनके मुँह में कुछ भोजन डाल देते। इस अवस्था में उनका जीवन कई वर्षों तक चला। शायद उनका भी वह खजाना चला गया था, ईश्वर की दी गई शक्ति चली गई थी।

एक और उदाहरण हमारे देश के पूर्व रक्षामंत्री जसवंत सिंह का है, जिनके साथ भी ऐसा ही हुआ। इसी प्रकार एक दिन वे भी ऐसी ही दशा में चले गए। जो व्यक्ति पूरे देश की रक्षा के लिए सक्षम था, वह अपने शरीर की रक्षा करने के काबिल भी नहीं रहा।

देश के सबसे लोकप्रिय और समझदार प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जिनका ६ दशकों का राजनैतिक जीवन एक मिसाल माना जाता रहा है, एक दिन पक्षाघात के फलस्वरूप इसी प्रकार की स्थिति में पहुँच गए। आज भी जीवित हैं, लेकिन उनके साथ किसी प्रकार का संवाद संभव नहीं। इन सभी उदाहरणों से मुझे ऐसा अनुभव होता है, जैसे सौ वर्ष की आयु होना ही पर्याप्त नहीं है। इतनी आयु तक पहुँचते-पहुँचते शारीरिक दुर्बलता तो आएगी ही। जीवन को चलाने के लिए दूसरों के सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी ही, लेकिन शरीर होकर भी व्यक्ति का अपने कार्य स्वयं करने के योग्य न होना- यह कोई शतायु नहीं है। कम से कम मुझे तो ऐसी शतायु नहीं चाहिए।

ऐसी अवस्था में व्यक्ति या तो घरवालों पर बोझ बना रहता है या फिर घर के लोग किसी समय ऐसे व्यक्ति को पागलखाने में छोड़ आते हैं। अस्पताल भी ऐसे व्यक्तियों को लंबे समय तक नहीं रखना चाहता। इसी तरह शरीर की एक और स्थिति होती है, जिसे अंग्रेजी में कोमा कहते हैं। कोमा की स्थिति में पूरा शरीर चेतना शून्य हो जाता है, लेकिन साँस चलती रहती है। ऐसे व्यक्ति को जीवित रखने के लिए नलियों द्वारा कुछ भोजन शरीर में दिया जाता है। व्यक्ति एक शव की तरह पड़ा रहता है, लेकिन उसमें श्वास का आवागमन होता रहता है। यह सबसे बुरी दशा है। परिवार के लोग उसके ठीक होने की प्रतीक्षा में उसका पालन करते रहते हैं। कितने ही उदाहरण देखे गए हैं, जिसमें व्यक्ति को वर्षों तक इसी अवस्था में जीवित रहना पड़ता है। ऐसे लोगों को मेडिकल साइंस में क्लीनिकली डेड कहा जाता है, यानी कि चिकित्सा की दृष्टि से मृत। ये सारी स्थितियाँ इंगित करती हैं उन अवस्थाओं की तरफ जिनके न होने की इच्छा व्यक्त की गई है मंत्र के इस खंड में-**अदीनाः स्याम शरदः शतम्** प्रार्थना है।

शेष भाग अगले अंक में.....

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

संस्था - समाचार

०१ से १५ जुलाई २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, सम्बन्धियों की पुण्य तिथि एवं अन्य अवसरों से सबंधित विशेष मन्त्रों से आहूति भी दिलवाये जाते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में ऋग्वेद के दसवें मण्डल के १२१ वें 'हिरण्यगर्भ सूक्त' की व्याख्या करते हुए **डॉ० धर्मवीर जी** ने बताया कि इस सूक्त में सृष्टि का विज्ञान है। इसके ऋषि 'हिरण्यगर्भ प्राजापत्य' और देवता 'क:' है। सूक्त के प्रथम मन्त्र से लेकर अन्तिम मन्त्र तक क्रमश: सूक्ष्म से स्थूल पदार्थ के निर्माण की व्याख्या है। अन्तिम मन्त्र में निर्माण की अन्तिम परिस्थिति है। देवताओं में सबसे बड़ा देव प्रजापति संसार के निर्माण से पहले भी सब जगह विद्यमान था। वह अपने ज्ञान का प्रकाश और जीवों के कल्याण के लिये संसार का निर्माण करता है। अपने सामर्थ्य से वह सब जानता था कुछ भी उससे छिपा नहीं है। वह विचार पूर्वक समग्रता से निर्माण करता है। सृष्टि निर्माण परमात्मा का यज्ञ है। जैसे यज्ञ में अग्नि प्रज्वलन, मंत्रपाठ, आहूति आदि होती है वैसे ही संसार के निर्माण में विचार, सामग्री, श्रम आदि लगता है। वह सर्वशक्तिमान है बिना किसी की सहायता लिये ही सब कार्य करता है। वह आत्माओं का आत्मा होने के कारण सबका आत्मा है, अन्तर्यामी है। जो जिससे सूक्ष्म होता है वह उसका आत्मा अर्थात् आधार होता है। वह सबमें सूक्ष्म है इसलिये अधिक सामर्थ्यवान् और सबका संचालक है। संसार के निर्माण के लिये संयोग और विभाग करने वाला वही है। अग्नि के उत्पन्न होने की प्रक्रिया ईश्वर से ही होती है। दो पदार्थों या अधिक पदार्थों को मिलाने के लिये उसे अग्नि में तपाना पड़ता है। ईश्वर संसार को जितनी बार तपाता है उतनी बार कुछ नया बनता है। वर्तमान के सब ठोस पदार्थ पहले तरल जलरूप थे। क्रमश: परिवर्तन होते-होते वर्तमान रूप में आता है। इस सूक्त में आलंकारिक वर्णन है। विशाल द्युलोक और पृथिवीलोक काँपते हुए मन से अपनी रक्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। अर्थात् ये सब जड़ पदार्थ अपने में समर्थ नहीं है। पृथ्वी आदि आकाशीय पिण्ड ईश्वर के ही बनाये हुए हैं और उसके ही बल से स्थिर हैं। ये उदय होता और चमकता हुआ सूर्य उसी के सामर्थ्य और प्रेरणा से चल रहा है। सब दृश्यमान पदार्थों को बनाने और गति देने वाला वही है। छोटे से छोटे परमाणु और बड़े-बड़े सब पदार्थ उसके चलाने से ही गतिशील हैं। भूकम्प, ज्वालामुखी, तूफान आदि स्वाभाविक नहीं है। आज संसार में जो जीवन है उसका प्रारम्भ ईश्वर ही करता है। जन्म और मृत्यु का चक्र वही चलाता है। सृष्टि में मनुष्य का निर्माण सबसे अन्त में होता है और थोड़ा होता है। मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ है अन्य सब प्राणी और जड़ पदार्थ मनुष्यों के उपयोग के लिये ही है। उसके जन्म से पहले वनस्पति, पशु, पक्षी आदि बहुत संख्या और अधिक मात्रा में बन चुके थे, क्योंकि उन सबके बिना मनुष्य का जीवन चल नहीं सकता। मनुष्य अधिक और अन्य पदार्थ

कम हो तो मनुष्यों को दुख भोगना पड़ेगा। इसलिये परमेश्वर ने अन्य पदार्थों को बहुत अधिक बनाया है। जड़, चेतन, साकार, निराकार देवों में सबसे अधिक बड़ा सबसे ऊँचा परमेश्वर एक ही है। वह पहले भी अधिष्ठाता था आज भी अधिष्ठाता है और आगे भी रहेगा। वह सबसे बड़ा नियामक है और स्वयं भी नियम का पालन करने वाला है। वह प्रभु हमारी हिंसा न करे अर्थात् हमें किसी प्रकार का दु:ख न दे। वह सत्यधर्मा है। उसका विचार और आचरण धर्म के अनुकूल है। सब आनन्ददायक पदार्थों को वही बनाता है। प्राणियों को सुख-दु:ख अपने कर्मों के कारण मिलता है। वह सब के कर्मों का ठीक-ठीक हिसाब रखता है, उसी के अनुसार फल देता है। वह संसार के सब मनुष्यों को धन सम्पन्न होने के लिये सभी प्रकार के साधन देता है। मनुष्य अन्य प्राणियों की अपेक्षा श्रेष्ठ और सुखी है। क्योंकि उसके पास ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि है। पशुओं को ज्ञान का सुख नहीं है। संसार का कोई भी मनुष्य परमात्मा का तिरस्कार नहीं कर सकता। हम सब उससे ही मांगते हैं वह हमारी योग्यता के अनुसार देता है। अपनी कामनाओं, आवश्यकताओं को, अपनी आत्मा को उसे समर्पित करें। तद् अनुकूल आचरण करना ही समर्पण है। आज्ञापालन करना ही भक्ति है। हमें अपनी हवि देना है समर्पण करना है उसके पास पहुँचना है। उस सुखस्वरूप की प्राप्ति के लिये परिचर्या करें। सेवा, पूजा, आदर, भक्ति, समर्पण, ध्यान, उपासना आदि शब्द ईश्वर के विषय में लगभग समानार्थी हैं।

रविवारीय सत्संग में समसामयिक चर्चा करते हुए आपने कहा कि राष्ट्रीय स्वयं संघ के संस्थापक गुरुजी ने हिन्दुओं को महापुरुष के नाम पर स्वामी विवेकानन्द और हिन्दुत्व के नाम पर सारा पाखंड दिया है। एक ओर हिन्दु समाज का अंधविश्वास इस देश को बर्बाद कर रहा है दूसरी ओर इस्लाम के नाम पर देश और विदेश में आतंकवादी निरपराध लोगों की हत्या कर रहे हैं। मुस्लिम बहुल देश आतंकवादियों को सभी प्रकार का सहयोग करके संसार को दारूल इस्लाम बनाने का सपना देख रहे हैं। जाकिर नायक जैसे बुद्धिमान प्रचारक इस्लाम के विस्तार के लिये आतंकवादियों को प्रेरित कर रहे हैं। संसार में सुख, शांति और समृद्धि वैदिक धर्म के प्रचार से ही सम्भव है।

प्रात:कालीन प्रवचन में आर्य समाज के विख्यात् इतिहासविद् **प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी** ने बताया कि ईश्वर अद्भुत कारीगर है उसके कार्य करने का ढंग बहुत निराला है। हम कोई भी कार्य अंधेरे में नहीं कर सकते हमें प्रकाश की आवश्यकता होती है लेकिन वह अंधेरे में भी अपना कार्य करता रहता है। उसे बिजली, जनरेटर आदि की कोई आवश्यकता नहीं है। किसान भूमि में बीज डालकर उस पर मिट्टी चढ़ा देता है तब भी अंकुर निकल आता है। मनुष्य कोई भी निर्माण कार्य टुकड़ों में करता है जैसे मकान बनाने के लिये दीवार, छत, प्लास्टर, दरवाजा, खिड़की आदि अलग-अलग बनाता है। दर्जी कपड़े के अलग-अलग भागों को सिलकर जोड़ता है। शिल्पी किसी मशीन के पुर्जों को अलग-अलग बनाकर जोड़ता है। किन्तु परमात्मा पदार्थों को एक बार में ही समग्रता से बनाता है चांहे वह जड़ पदार्थ हो या चेतन प्राणियों के शरीर। ईश्वर का कार्य पूर्ण है क्योंकि वह सर्वज्ञ है। इसलिये वह अपनी कार्यप्रणाली में कोई परिवर्तन नहीं करता। सृष्टि के आरम्भ से अब तक मनुष्य आदि के शरीरों की रचना वैसे ही करता है जैसे पहले करता था। मनुष्य के कार्य अपूर्ण होते हैं इसलिये वह जब भी किसी कार्य को दोबारा करता है तो उसे नयेपन के साथ करता है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार आवश्यकता अविष्कार की जननी है। किन्तु परमात्मा मनुष्यों की आवश्यकता से पहले ही सब पदार्थों का निर्माण करता है। सृष्टि के आदि में वेदज्ञान प्रदान करता है। स्वामी सत्यप्रकाश जी वेद और आधुनिक विज्ञान दोनों के विद्वान् थे। वे बड़े-बड़े वैज्ञानिकों की शंकाओं का समाधान करते थे। न्यूटन के सिद्धान्त के अनुसार जड़ पदार्थ स्वयं गति नहीं कर सकता जब तक कोई चेतन उसे बाहर से बल लगाकर गति न दे। इसी आधार पर स्वामी जी वैज्ञानिकों को ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान कराते थे। सड़क पर सिग्नल आदि की व्यवस्था होने पर भी मनुष्य निर्मित और संचालित वाहन मार्ग से भटक कर एक दूसरे से टकरा जाते हैं। सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, अन्य ग्रह आदि बड़े-बड़े आकाशीय पिण्ड अपने निश्चित मार्ग में गतिशील

है। आकाश में कोई लाल, हरी, पीली बत्ती नहीं है तो भी कभी कोई किसी दूसरे पिण्ड से टकराता नहीं है यह सब ईश्वर की व्यवस्था है। वही उन सब को गति देने और नियम में रखने वाला है। वैदिक धर्म और अन्य मतों में मुख्य रूप से अन्तर यह है कि अन्य मतों में ऋत के लिये कोई स्थान नहीं है। वैदिक धर्म में महापुरुष उसी को माना जाता है जो ईश्वर के नियमों, आज्ञाओं का पालन करता है। अन्य मतों में पैगम्बर उसी को कहते हैं जो चमत्कार करता है, जो ईश्वर के नियमों को तोड़ता है, उससे विपरीत चलता है। चाँद के दो टुकड़े करना, कुमारी से बच्चे पैदा होना, मुर्दे को जीवित करना आदि बड़प्पन की कसौटी माना जाता है। आर्य समाज सिकुड़ रहा है ऋषि दयानन्द फैल रहा है। महर्षि दयानन्द जी हजारों वर्षों बाद ऐसे महापुरुष हुए जो मनुष्यों के साथ ही पशु, पक्षियों, वनों की रक्षा के लिए भी चिन्तन करते थे। वैदिक धर्म के विरोधियों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये हमें दूसरे मत के ग्रन्थों का भी अध्ययन करना चाहिये। वेद और ऋषिकृत ग्रन्थों पर आक्षेप करने वालों को उन्हीं के ग्रन्थों के प्रमाणों से चुप कराया जा सकता है। आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी विद्वानों ने जो तर्क और प्रमाण दिये हैं उनको याद रखना चाहिये। स्वामी दर्शनानन्द, पं. रामचन्द्र देहलवी, पं. शान्तिप्रकाश, पं. चमूपति, पं. गगाप्रसाद उपाध्याय की पुस्तकों को गम्भीरता से पढ़े। स्वामी, स्वतंत्रानन्द, स्वामी आत्मा नन्द, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी सर्वानन्द जी एवं अन्य संन्यासियों, विद्वानों ने आर्य समाज का गौरव बढ़ाया।

आगे आपने कहा कि हम सबको ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये जिससे हमारा मन शुभ संकल्प वाला हो, कल्याणकारी और सदा प्रसन्न रहने वाला हो। सन्तों, महात्माओं, महापुरुषों ने कहा है-मन के हारे हार है मन के जीते जीत। मन के प्रसन्न रहने पर अच्छी वाणी बोलते है उसका वातावरण पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति बुरे विचारों से गिरते और अच्छे विचारों से उठते हैं। मन को खाली न रहने दें, बेकार आदमी का मन शैतान का घर होता है। मन जागते और सोते में दूर-दूर तक जाता है इसलिये इस मन को सदा किसी अच्छे काम में लगाये रखें। प्राणायाम, गायत्री मंत्र के जप और स्वाध्याय से मन वश में रहता है। आर्यसमाज के संन्यासियों, विद्वानों, कार्यकर्ताओं ने सब जगह श्रेष्ठ विचारों को फैलाकर राष्ट्र को ऊँचा उठाया। कविताओं, गीतों, लेखों, और व्याख्यानों के माध्यम से अच्छे विचारों का प्रचार किया। गाँवों और नगरों में लोगों को चरित्रवान बनने के लिये प्रेरित किया। श्रेष्ठ विचारों की सुगंधि और यश बहुत दूर तक जाता है। दिनचर्या व्यस्त और सादगीपूर्ण होने से मन दूषित नहीं होता। वेद के विचारों से विदेशी विद्वान् भी प्रभावित हैं। वेदों में सब श्रेष्ठ विचार हैं। बच्चे से वृद्ध तक सबका कल्याण श्रेष्ठ विचारों से ही हो सकता है। अच्छा विचार देने से परिवार, समाज, नगर सुखी रहेगा। जहाँ कहीं भी हम अच्छे विचार प्रकट करेंगे वहाँ के लोगों का जीवन श्रेष्ठ होगा। दूषित विचार देने से लोग पतित होते हैं। आजकल जो समाचार पत्रों में दुराचार आदि की घटनायें प्रकाशित होती है वह सब काम, क्रोध आदि बुरे विचारों के प्रसारित होने का परिणाम है। देश और जाति के युवाओं को अच्छे विचार दिये जाते तो इस प्रकार की घटनायें नहीं होती। इसमें नेताओं का भी दोष है जो अपराधियों को शरण देते हैं। देश और जाति को बचाने के लिये अपने मन में पीड़ा पैदा करें।

प्रात:कालीन सत्संग में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि हमें अपने प्रत्येक कार्य के आरम्भ में ईश्वर का ध्यान अवश्य करना चाहिये। आजकल बहुत से लेखक धर्म, अध्यात्म, योग पर पुस्तकें लिख रहे हैं किन्तु ईश्वर का ध्यान बिल्कुल नहीं करते। उनके पुस्तक के किसी पृष्ठ में ओ३म् लिखा हुआ नहीं दिखता। जो व्यक्ति लोकैषणा और वित्तैषणा से ग्रस्त होकर कोई कार्य करता है उसे ईश्वर याद नहीं आता है, जो परोपकार की इच्छा से किसी कार्य का आरम्भ करता है तो वह सर्वप्रथम ईश्वर का स्मरण करता है। महर्षि दयानन्द जी ने अपने प्रत्येक ग्रन्थ के आरम्भ में ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना लिखा है। मनु जी महाराज के अनुसार संन्यासी और वानप्रस्थी को संसार की ऐषणाओं से पृथक् रहना चाहिये। तभी ईश्वर के परम पद को प्राप्त हो सकता है। कौन ईश्वर को प्राप्त कर सकता है? १. जो वैर भाव छोड़कर हिंसा से अलग रहता है। मन और वाणी से

द्रोह, ईर्ष्या करना आदि भी हिंसा ही है। २. इन्द्रियों का संग न करने वाला ईश्वर की ओर बढ़ता है। पाँच ज्ञान और पाँच कर्म इन्द्रियों को वश में रखने वाला ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। ३. वेदानुकूल कर्मों को करने वाला ईश्वर के निकट पहुँचने लगता है। उसके लौकिक और आध्यात्मिक सुख में वृद्धि होती है। ४. उग्र तप करने वाला ईश्वर को प्राप्त करता है। तप करने से शरीर और अन्तःकरण शुद्ध होता है। व्यवहार सम्बन्धी छोटे-छोटे दोषों को भी दूर करना चाहिये। शिष्टाचार का ध्यान रखना चाहिये। बचपन से ही अच्छा वातावरण और सत्संग मिलने से आध्यात्मिक उन्नति सरलता से होती है। जो लोग जमाने के संग चलना चाहते हैं वे ईश्वर से दूर होकर सांसारिक व्यवहारों में फंस जाते हैं। जो ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं वे ऋषियों के बताये मार्ग का अनुसरण करते हैं।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के जीवन की अनेक विशेषताओं में एक मुख्य विशेषता यह है कि वे सदा सत्य बोलते थे। सत्यभाषण को धर्म मानते थे। इसीलिये उन्होनें सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक की रचना किया। आर्यसमाज के चौथे नियम में लिखा है-सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि सभी ग्रन्थों में सत्य की महिमा का वर्णन है। सत्य बोलने वाला आदर्श व्यक्ति होता है। असत्य बोलने वाला अवसरवादी होता है। महर्षि पतंजलि के अनुसार अहिंसा आदि पाँच महाव्रतों में एक सत्य भी है। सत्य बोलने से मन पवित्र रहता है। साधारण मनुष्य का आत्मा भी सत्य असत्य का जानने वाला है तथापि स्वार्थ, हठ, दुराग्रह के कारण वह सत्य को छोड़कर असत्य की ओर झुक जाता है। सत्य बोलने वाला सदा सुखी होता है। असत्य बोलने वाला आंशिक रूप से सुखी हो सकता है स्थायी नहीं।

सायंकालीन सत्संग में 'उपदेश मंजरी' पुस्तक का पाठ एवं चर्चा होती है। इस क्रम में **आचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी से पहले के वेदभाष्यकार वेदमन्त्रों के अर्थ को अपनी अज्ञानता के कारण ठीक से प्रकट नहीं कर सके। वेद भाष्य के लिये जिस योग्यता की अपेक्षा होती है वह उनमें नहीं थी। इसलिये वेदों में मूर्ति पूजा, बहुदेवतावाद आदि का विधान उन्हें दिखाई देता था। वे अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी आदि की पूजा कर रहे थे। स्वामी जी ने पाणिनीय व्याकरण, महाभाष्य, निरुक्त, दर्शन, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थों की सहायता से वेदमन्त्रों का सही अर्थ प्रकाशित किया। वेदों में ईश्वर के अनेक नाम बताये गये हैं। अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आपः, प्रजापति, इन्द्र, मित्र, वरुण, आदि सब ईश्वर के ही नाम हैं।

सायंकालीन सत्संग में परोपकारिणी सभा के मन्त्री **श्री ओममुनि जी** ने शाहपुर प्रचार यात्रा की जानकारी देते हुए बताया कि इस यात्रा में परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. धर्मवीर जी, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी, श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य, पंजाब के श्री मदन लाल जी और अमेरिका से आये हुए उनके बेटे के साथ मैं भी गया था। सुबह अजमेर से चलकर नौ बजे शाहपुरा पहुँच गये। कृष्ण सिंह बारहट स्वामी जी के समकालीन थे। स्वामी जी द्वारा कृष्ण सिंह बारहट और कृष्ण सिंह बारहट द्वारा स्वामी जी को लिखे गये पत्रों की पाण्डुलिपि तथा 'महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार' (२ भागों में) पुस्तक भी श्री केसरी सिंह बारहट राजकीय संग्रहालय को भेंट किये गये। इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। शाहपुरा का स्वामी दयानन्द जी से गहरा सम्बन्ध है। वे ढाई मास तक वहाँ रहे। वहाँ के राजा नाहर सिंह को स्वामी जी ने उपदेश दिया। स्वामी जी राजाओं को संगठित करके देश को स्वतन्त्र कराना चाहते थे। शाहपुरा के ठाकुर केसरी सिंह बारहट, उनके भाई जोरावर सिंह और पुत्र प्रताप सिंह ने राष्ट्रीय-आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और अनेक कष्ट सहे। प्रताप सिंह को लार्ड हार्डिंग्ज पर बम फेंकने के कारण जेल की सजा हुई। उनके परिवार के लोगों को अंग्रेज सरकार ने बेघर कर दिया। नारकीय यातनाओं के फलस्वरूप वे २५ वर्ष की अल्पायु में जेल में ही २४ मई १९१८ को राष्ट्र के लिये बलिदान हो गये। शाहपुरा में त्रिमूर्ति बारहट स्मारक का निर्माण किया गया है। १९९२ में स्थानीय महाविद्यालय का नाम अमर शहीद कुं. प्रताप सिंह बारहट के नाम पर कराया गया। २४ मई

२०१२ को बरेली जेल में बैरक नं. २ को ''प्रताप सिंह बारहट बैरक'' नाम दिया गया।

पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के केन्द्रीय प्रभारी एवं स्वामी रामदेव जी के अत्यंत निकट सहयोगी **श्री जयदीप आर्य जी** राजस्थान प्रान्त के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ ऋषि उद्यान आये। सभी आचार्यों एवं ब्रह्मचारियों ने उनका स्वागत किया। स्वामी मुक्तानन्द जी ने परोपकारिणी सभा, गुरुकुल और सभी आश्रमवासियों की ओर से आभार प्रकट करते हुए उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया।

डॉ. धर्मवीर जी के अनुरोध पर आर्य समाज अटलांटा, अमेरिका के पुरोहित **पं. वेदश्रमी जी** अपनी भारत यात्रा के दौरान ऋषि उद्यान आये। अब वे अमेरिका के नागरिक बन चुके हैं। उन्होंने अमेरिका में चल रही गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। वे अमेरिका में योग-आयुर्वेद का प्रचार, वैदिक संस्कार और गुरुकुल का संचालन करते हैं। यहाँ बिहार के मधुबनी नामक स्थान में भी गुरुकुल का निर्माण करके उसका विस्तार करने में अपने भाई का पूर्ण सहयोग कर रहे हैं।

*** डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

(क) १-३ जुलाई २०१६ आर्यसमाज सूरजकुण्ड मार्ग, मेरठ के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

(ख) २४ जुलाई नारनौल, हरियाणा।

(ग) २९-३१ जुलाई बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में सत्संग।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

(क) ३ जुलाई - आर्यसमाज अजमेर में व्याख्यान।

(ख) १५-१७ जुलाई- वैदिक भक्ति साधना आश्रम, रोहतक में यज्ञ-प्रवचन।

(ग) २३-२४ जुलाई- पुणे में युवकों के लिए सेमिनार (सैद्धान्तिक चर्चा)

*** श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य का प्रचार कार्यक्रमः-**

(क) १-३ जुलाई- आर्यसमाज सूरजकुण्ड मार्ग, मेरठ के वार्षिकोत्सव में प्रवचन।

(ख) १० जुलाई- आर्यसमाज अजमेर (केसरगंज) के साप्ताहिक अधिवेशन में वेद-प्रवचन।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगंद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

आगामी ऋषि मेला

४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

को ऋषि उद्यान में होगा

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

ज्योतिष-शिविर

– ब्र. दिलीप,

ज्योतिष विषय से हम लोगों का कम सम्बन्ध होने से वह विषय प्राय: अपरिचित-सा रहता है। अत: ब्रह्मचारियों को ज्योतिष का मूलभूत परिचय प्राप्त हो, वे पञ्चाङ्ग देखना सीखें, सृष्टि काल गणना एवं मासादि के निर्धारण में जो पक्ष विपक्ष हैं, उनका परिज्ञान हो इस हेतु आचार्य सत्यजित् जी के संयोजन में परोपकारिणी सभा द्वारा २५-२८ जून तक ऋषि उद्यान, अजमेर में 'चतुर्दिवसीय ज्योतिष शिविर' का आयोजन किया गया। आश्रमवासी व अन्यों को मिला कर लगभग १५० लोगों ने इसमें भाग लिया। डॉ. धर्मवीर जी , आ. सत्यजित् जी, आ. सत्येन्द्र जी, आ. सोमदेव जी, आ. शिवकुमार जी, आ. राजेन्द्र जी, आचार्या आदेश जी व डॉ. रूपचन्द्र दीपक जी आदि विद्वान् भी इसमें उपस्थित रहे। शिविर में शिक्षक के रूप में आ. दार्शनेय लोकेश जी व उनके सुपुत्र विभु जी यहाँ पधारे। श्री दार्शनेय जी ''आर्ष मोहन तिथि पत्रक'' के सम्पादक हैं। आपको ज्योतिष का लम्बा अनुभव है। आपने वर्तमान में ज्योतिषीय काल गणना में चल रही विसंगतियों के विरुद्ध आवाज उठाकर एक शुद्ध खगोलीय घटनाओं से मेल खाने वाले पञ्चांग को आर्य जाति के समक्ष प्रस्तुत किया है। फलित ज्योतिष ने अपनी सुविधा के लिए १३ अंश २० कला विस्तार वाले २७ नक्षत्र स्वीकार किये हैं। आपने इसका प्रबल प्रतिकार करते हुए वेदवर्णित २८ नक्षत्रों को उनके पृथक् पृथक् विज्ञान सम्मत विस्तार मान के आधार पर अपने पञ्चांगीय गणित में स्थान दिया है। वस्तुत: किसी भी नक्षत्र का विस्तार १३ अंश २० कला नहीं है। किञ्च, पर्व, व्रत, त्योहार आदि भी गलत पञ्चांगों के कारण हिन्दू जनता गलत समय में मना रही है। मकर संक्रान्ति को २२ दिसम्बर के स्थान पर १४ जनवरी को मनाया जा रहा है। लगभग सभी त्यौहार आदि वास्तविक तिथि से २४ दिन बाद मनाये जा रहे हैं। दार्शनेय जी ने इन सब दोषों से रहित, सटीक गणनाओं से युक्त पञ्चांग का सृजन किया है। शिविर में इन सभी विषयों पर भी बहुत-सी चर्चाएँ हुई। सृष्टि संवत् के विषय में भी सत्र रखा गया था। जिसमें दार्शनेय जी व उनके सुपुत्र विभु जी ने गणितीय आधार पर १ अरब ९७ करोड वाली गणना को ही सही बताते हुए १ अरब ९६ करोड़ वाली गणना को स्वीकार करने पर सूर्यादि के शीघ्रोच्च, मन्दोच्चादि से सम्बन्धित गणित में दोषापत्ति होने की बात कही। इस विषय पर काफी चर्चा हुई, फिर भी झटिति निर्णय की अपेक्षा, एक बार अन्य विद्वानों के समक्ष भी दोनों पक्षों को प्रस्तुत करके सबकी एकमति होने पर निर्णय तक पहुँचा जावें। इस आशय को मन में धर के आ. सत्यजित् जी ने शिविर के अन्त में श्री दार्शनेय जी से अगले शिविर के विषय में बात रखी। उन्होंने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। अगले वर्ष जून मास में एक विद्वत्स्तरीय शिविर की सम्भावना है, जिसमें आर्यसमाज से सम्बद्ध ज्योतिषीय गणना पर ध्यान केन्द्रित किया जायगा। जिसमें हम सभी ब्रह्मचारियों को भी जानने व सीखने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

अब शिविर का प्रतिदिन का कुछ विवरण:-

प्रथम दिन:- प्रथमदिन पूर्वाह्न सत्र में ज्योतिष का सामान्य परिचय हुआ। पञ्चांग देखने की विधि तथा पंचांग में आए हुए तिथि, नक्षत्र आदि का प्रारम्भ और समाप्तिकाल, ब लग्नारम्भ को जानने की विधि का शिक्षण हुआ। त्रुटि, रेणु, लव, लीक्षक व प्राण, इन काल गणना के सूक्ष्म एककों को बताते हुए श्री दार्शनेय जी ने बताया कि सेकिण्ड के ३२,४०,००० वें भाग को त्रुटि कहते हैं। इसी प्रकार स्थूल एककों में प्राण पल, घटी अहोरात्र (दिन-रात) इत्यादि होते हैं। दिनों की चर्चा करते हुए सावन, सौर, नक्षत्र, व चान्द्र दिनों के बारे में बताया। सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक को 'सावन दिन' कहते हैं। सूर्य के एकांश भोग काल को 'सौर दिन' कहते हैं। एक तिथि का एक 'चान्द्र दिन' होता है। इसी प्रकार एक नक्षत्र के उदय से अगले नक्षत्र के उदय तक के काल को 'नाक्षत्र दिन' कहते हैं। जिसका मान ६० घटी= (२४ घण्टा) होता है। अपराह्न द्वितीय सत्र में तिथिक्षय एवं तिथिवृद्धि के विषय में प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि यदि तिथि सूर्योदय से पहले प्रारम्भ होकर अगले सूर्योदय के बाद तक रहे, उसे 'तिथिवृद्धि' कहते हैं और सूर्योदय के बाद से प्रारम्भ होकर अगले सूर्योदय से पूर्व ही समाप्त हो जाए तो उसे 'तिथिक्षय' कहा जाता है। क्षितिज पर जो राशि रहती है, उसे लग्न कहते हैं। मास के विषय में बताते हुए कहा कि चान्द्रमास शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर अमावस्या पर पूर्ण होता है। जहाँ पूर्णिमा पर मास की समाप्ति होती है, वह गलत है। श्री दार्शनेय जी ने यह तर्क रखा कि यदि मास पूर्णिमान्त माने जाएँ तो सृष्ट्यादि

में १५ दिन का ही मास मानना पड़ेगा। क्योंकि सभी वादिगण सृष्ट्यारम्भ को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही मानते हैं। उनका दूसरा तर्क था कि आज भी भारत में छपने वाले सभी पञ्चांगों में पूर्णिमा के लिए '१५' एवं अमावस्या के लिए '३०' संख्या लिखी होती है। ऐसा लिखा जाना भी इस बात को पुष्ट करता है कि मास अमान्त (अमावस्या को अन्त होने वाले) ही होते हैं।

द्वितीय दिनः- दूसरे दिन के सत्रों में दार्शनेय जी ने राशि, नक्षत्र, करण आदि के नाम लिखाकर उनके बारे में समझाया। कुण्डली देखकर ग्रहों की खगोल में स्थिति कैसे जानी जाती है, उसे विस्तार से बताया।

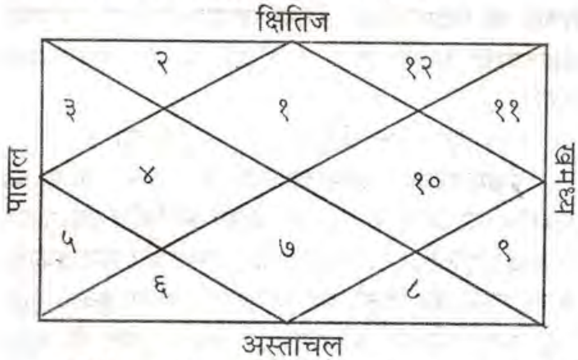

उन्होंने कहा कि कुण्डली के १२ घर ३०-३० अंश के होते हैं। प्रथम घर में यदि कोई ग्रह हो तो जानना चाहिए कि वह अभी उदित हो रहा है। दशवें घर में तो हमारे शिर के ऊपर हैं। यदि सातवें घर में हो तो अस्त हो रहा है और चौथे घर में होने पर ठीक हमारे पैरों तले होता है। कुण्डली से फलित नहीं, बल्कि उससे हमें खगोलीय स्थिति का पता लगता है। उन्होंने कुण्डली देखकर कैसे तिथि, पक्ष, मास, वयः आदि का ज्ञान होता है, उसे भी अच्छी तरह समझाया। और उन्होंने यह भी बताया कि इन्हीं कुछ चमत्कार-सी लगने वाली बातों के आधार पर फलित ज्योतिष करने वाले भोले-भाले लोगों को मोहित करके ठगते रहते हैं।

तृतीय दिन- तीसरे दिन मुहूर्त, होरा, दिनमान, रात्रिमान, सूर्योदय और सूर्यास्त को गणितीय विधि से निकालना सिखाया। दिनमान व रात्रिमान के १५-१५ वें भाग को मुहूर्त तथा १२-१२ वें भाग को होरा कहते हैं। होरा से प्रायः १ घण्टा लिया जाता है, किन्तु वह केवल वसन्त सम्पात तथा शरत्संपात के दिन ही होता है। अन्य समय में होरा=१घण्टा नहीं होता है। प्रहर के विषय में पूछने पर उन्होंने कहा कि ३घण्टे का प्रहर नियत करना गलत है। क्योंकि दिनमान तथा रात्रिमान में ४ का भाग देने पर जो कालखण्ड आता है उतना ही एक प्रहर का कालमान माना जाना उचित है। एतदनन्तर सृष्टि काल गणना का प्रक्रम प्रारम्भ हुआ। स्वा. दयानन्द सरस्वती विरचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका व सूर्यसिद्धान्त के अनुसार सृष्टि काल गणना समझाते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की कृपा से ही हम इस काल गणना को समझने में समर्थ हुए हैं। उन्होंने स्वामीजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। स्वामी जी द्वारा पठन-पाठन में निषिद्ध धर्मसिन्धु व निर्णयसिन्धु का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में प्रचलित पञ्चांग इन्हीं पुस्तकों के सिद्धान्त पर आश्रित होने से, चूँकि आश्रय अनार्ष है, अतः प्रायः सारे पञ्चांग अनार्ष हैं। अपराह्न सत्र में अयनांश, निरयण, सायन, इन तीन ज्योतिषीय शब्दों पर सभी का ध्यान आकृष्ट करते हुए श्री दार्शनेय जी ने बताया कि सही काल गणना को समझने के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है। वर्तमान पञ्चांग निरयन पद्धति से बनते हैं, परन्तु सायन पद्धति के बिना कालगणना ठीक हो ही नहीं सकती। सायन पञ्चांग ही सटीक काल गणना को दे सकता है।

चतुर्थ दिनः- चौथे दिन के सत्रों में तिथि, चन्द्रस्पष्ट, चन्द्रगति, सूर्यस्पष्ट, सूर्यगति, तिथि कब तक रहेगी इत्यादि विषय को गणितीय विधि से निकालना सिखाया। तिथि को परिभाषित करते हुए उन्होंने बताया कि सूर्य और चन्द्र के बीच १२ अंश (डिग्री) का अन्तर एक तिथि कहलाती है। तत्पश्चात् अक्षांश देशान्तर, भूमध्यरेखा, क्रान्तिवृत्त, विषुवत्वृत्त, विषुवांश इत्यादि शब्दों का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए लंकोदय से स्वोदय निकालने की विधि को भी दीर्घगणितसंक्रिया के माध्यम से हमें सिखाया।

इस प्रकार केवल चार दिनों में श्री दार्शनेय जी व उनके सुपुत्र श्री विभु जी ने ज्योतिष की मूलभूत अधिक से अधिक बातों को हमारे सम्मुख रखा। पूरे शिविर में श्री दार्शनेय जी की पढ़ाने की रोचक शैली तथा श्री विभु जी की पाठकों के हृदय में उतर कर तार्किक ढंग से समझाने की शैलियों के अद्भुत सम्मिश्रण ने पाठकों में सीखने के प्रति सतत अभिरुचि व विषय के प्रति आदर भाव बनाए रखा। प्रायः सभी ब्रह्मचारी भ्राताओं, आश्रमवासी व अन्य बाहर से पधारे हुए महानुभावों ने रुचि से सभी सत्रों में भाग लिया। शंका-समाधान भी हुए।

शिविर के समापन के अवसर पर कुछ पाठकों ने अपने अनुभव सुनाए। श्री दार्शनेय जी व श्री विभुजी का

धन्यवाद किया। परोपकारिणी सभा के माननीय प्रधान श्री डॉ. धर्मवीर जी एवं आ. सत्यजित् जी ने भी अन्त में दोनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किए। हम सभी दार्शनेय लोकेश जी तथा उनके सुपुत्र विभुजी के अत्यन्त आभारी हैं। जिन्होंने अपना अमूल्य समय हमें देकर ज्योतिष में हमारा मार्गदर्शन किया। दोनों पिता पुत्र के हृदय में सत्य के लिए तड़प थी। उनके कथनों में सत्य व तर्क का मिलन था। स्वभाव में विनम्रता परिलक्षित हो रही थी। उनके वाक्य सीधे पाठकों के हृदय को छू रहे थे। वे सत्य काल विधान को स्थापित करने के लिए कटिबद्ध हैं। विगत दस वर्षों से आर्ष तिथि पत्रक के माध्यम से यथार्थ कालगणना को जनता के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। उनका यह कार्य आर्य जाति के लिए प्रेरणा और गौरव देने वाला है। हम प्रभु से श्री दार्शनेय और उनके परिवार के स्वास्थ्य, दीर्घायु और मंगलमय जीवन की कामना करते हैं। अन्त में मैं पूज्य आ. सत्यजित् जी सभा के प्रधान माननीय डॉ. धर्मवीर जी, माननीय मंत्री श्री ओम् मुनि जी व अन्य सभी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। जिनकी कृपा व सहयोग से हम सबको शिविर में भाग लेने तथा कुछ सीखने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

- आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर, राज.।

आर्यजगत् के समाचार

१. आवश्यकता- श्री गंगानगर-राज. के ग्रामीण क्षेत्र में आर्यसमाज के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों एवं ऋषि दयानन्द की विचारधारा को प्रचारित, प्रसारित करने के लिए एक वानप्रस्थी अथवा संन्यासी की आवश्यकता है। आवास एवं उचित मानदेय की व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की जायेगी। सम्पर्क सूत्र- ९८२८२४०७१७, ८७६४२४४१४२

२. २१ जून अन्तर्राष्ट्रीय योगदिवस मनाया- आर्यसमाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. में दि. २१ जून २०१६ को यू.एन.ओ. द्वारा घोषित अन्तर्राष्ट्रीय योगदिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। विश्व कल्याण की कामना के लिये श्री राकेश कुमार आर्य व श्री मंगतसिंह आर्य ने वेद मन्त्रों से विशेष यज्ञ कराया। यज्ञ के यज्ञमान श्री योगेश्वर दयाल आर्य व श्री आमोद कुमार आर्य सपत्नीक रहे। अपने सम्बोधन में आर्यरत्न आचार्य गुरुदत्त आर्य ने बताया कि महर्षि पतञ्जलि ने चारों वेदों से १९५ सूत्र लेकर ५५, ५५, ३४ व ५१ सूत्रों के चार अध्याय में 'योगदर्शन' नामक ग्रन्थ विश्व कल्याण के लिए करते हुए प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान श्री आनन्दपाल सिंह आर्य ने बताया कि मनुष्य वेद के स्वाध्याय-सत्संग व योगाभ्यास से शरीर की पुष्टि प्राप्त कर आत्मा और अन्त:करण को शुद्ध करके सर्वव्यापक परमात्मा के आनन्द को प्राप्त कर सकता है। उन्नति अर्थात् आनन्द प्राप्ति का यह प्रयत्न सफल होता है अष्टांग योग से। योग से विश्व का कल्याण हो विश्व में शान्ति-सुख-सुमद्धि योग से व्याप्त हो, इस कामना के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

३. बलिदान दिवस की तैयारी- माण्डवी (कच्छ) में २२ अगस्त २०१६ भानुमती श्यामजी कृष्ण वर्मा के बलिदान दिवस के अवसर पर भव्य आर्य महिला महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व व माण्डवी आर्यसमाज जन सहभागिता के साथ इस कार्यक्रम को भव्यता के साथ मनाने जा रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानसपुत्र, स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक, क्रान्तिवीर, इंग्लैण्ड में इण्डिया हाऊस के संस्थापक एवं हजारों युवकों के प्रेरणास्रोत पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा की धर्मपत्नी, देशभक्ता, भारतीय संस्कृति-संस्कारों से ओतप्रोत स्वर्गीया भानुमती वर्मा का ८३वाँ बलिदान दिवस का कार्यक्रम गुजरात सरकार के सहयोग से मनाया जायेगा, जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ का कार्यक्रम रखा है, यज्ञ के ब्रह्मा आर्यसमाज काँकरीया अहमदाबाद के पुरोहित (धर्माचार्य) पं. श्री दिवाकर शास्त्री होंगे।

४. संस्कार शिविर सम्पन्न- आर्यसमाज महामन्दिर एवं आर्य वीर दल क्रान्तिकारी पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल शाखा जोधपुर, राज. के संयुक्त तत्त्वावधान में २० मई से १२ जून २०१६ तक व्यक्तित्व निर्माण प्रशिक्षण एवं संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। सेवाराम आर्य द्वारा योग व प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया गया। वरिष्ठ आर्य वीर कमलकिशोर द्वारा बच्चों को संस्कार हेतु यज्ञ, बौद्धिक व चरित्र निर्माण की बातें बताई। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र सिंह सोलंकी नेता प्रतिपक्ष नगर निगम थे।

५. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज हुड्डा, सेक्टर-१२, पानीपत, हरियाणा का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव २७ से २९ मई २०१६ विविध सम्मेलनों तथा कार्यक्रमों के

साथ सम्पन्न हुआ। स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती तथा छत्तीसगढ़ से पधारे आर्य वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. अजय आर्य ने समारोह को सम्बोधित किया। अमृतसर से पधारे भजनोपदेशक दिनेश पथिक ने सुमधुर भजनों के माध्यम से ऋषि का संदेश जन-जन के सामने रखा।

६. शिविर सम्पन्न- सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद्, आर्य समाज जयपुर (दक्षिण) एवं जी.एल. सैनी नर्सिंग कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में २० से २६ जून २०१६ तक आर्य युवा चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास आवासीय शिविर जी.एल. नर्सिंग कॉलेज में सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन २० जून को झण्डारोहण के साथ राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश श्री प्रशान्त अग्रवाल द्वारा हुआ। अपने सम्बोधन में न्यायाधीश श्री अग्रवाल ने उल्लेख किया कि आज की व्यस्त जीवनशैली में माता-पिता अगली पीढ़ी को पर्याप्त समय नहीं दे पाते, अतः इस प्रकार के शिविर ही युवा पीढ़ी को शौर्य एवं संस्कार प्रदान करने के माध्यम हैं। आर्ययुवक परिषद्, राजस्थान के अध्यक्ष यशपाल यश ने समाज में बढ़ते अंधविश्वास एवं पाखण्ड पर चिन्ता प्रकट करते हुए इनके उन्मूलन हेतु ऐसे शिविरों की महती आवश्यकता बताई। व्यायाम प्रशिक्षण का प्रशिक्षण श्री विजेन्द्र आर्य-जीन्द, हरि., मनोज आर्य-फरीदाबाद, विमल आर्य-दिल्ली ने दिया। बौद्धिक श्री अमरसिंह आर्य, जसवन्त राय, रामकिशोर शर्मा, राजीव शर्मा, डी.के. गुप्ता, डॉ. प्रमोद पाल, सुनील अरोड़ा आदि ने प्रदान किया। व्यायाम प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

७. यज्ञ सम्पन्न- आर्यसमाज सम्भाजीनगर, औरंगाबाद, महा. की ओर से मराठवाडा क्षेत्र के अकाल निवारणार्थ दि. २७ जून से ३ जुलाई २०१६ तक 'पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ' (वैज्ञानिक प्रयोग) आयोजित किया गया। इन सात दिनों में १५०० यजमानों ने भाग लिया। इस यज्ञ में ८४ प्रकार की वनौषधी हवन सामग्री के रूप में शुद्ध गाय के घी, बड (बरगद), पिपल, औदुम्बर (गुलर), पलाश इन वृक्षों की समिधाओं का प्रयोग यज्ञ में किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. कमलनारायण आर्य एवं पुरोहित पं. शिवकुमार शास्त्री की उपस्थिति में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री ज्वालादास महारा मठ डेरा लक्ष्मण चावडी कैलाशनगर पर यज्ञ सम्पन्न हुआ।

८. गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार- समस्त विद्वानों को सूच्य है कि वेद वेदांग, आर्य समाज व वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि में लिखे गये ग्रन्थ पर प्रतिवर्ष 'गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार' किसी चुने हुए विद्वान् के ग्रंथ पर दिया जाता है। पुरस्कार में २१ हजार रुपये, स्मृति चिह्न तथा अंग वस्त्र द्वारा एक भव्य समारोह में सम्मानित किया जाता है। एतदर्थ विद्वानों से अनुरोध है कि अपने महत्त्वपूर्ण कृतियों की ४ प्रतियाँ कार्यालय को १५ अगस्त २०१६ तक भेजने की कृपा करें। ग्रन्थ किसी भी भाषा में लिखे गये हो। ग्रन्थ ढ़ाई सौ पृष्ठ से कम के ग्रन्थ पर विचार नहीं किया जायेगा। निर्णायकों का निर्णय मान्य होगा। सम्पर्क- गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति, ५८७, बाबूगंज मण्डी, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद। **दूरभाष- ०९४१५२३५६३८**

९. अभिनन्दन समारोह- २६ जून २०१६ आर्य कुल योगपीठ एवं आर्यसमाज यमलार्जुनपुर कैसरगंज (बहराइच), उ.प्र. के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित गुरुकुल झज्जर महाविद्यालय, झज्जर, हरि. के नवनियुक्त प्राचार्य श्री आनन्द मित्र (स्वामी शुद्धिबोध सरस्वती) का अभिनन्दन समारोह मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री धर्मवीर आर्य प्रधान एवं संचालन डॉ. सत्यमित्र आर्य मन्त्री ने की।

१०. अष्टादश महोत्सव सम्पन्न- आर्य कन्या शिवगंज, राज. का अष्टादश वार्षिकोत्सव एवं नवनिर्मित अतिथिशाला का लोकार्पण समारोह दि. १० से १२ जून को बड़े हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया, जिसमें आर्यजगत् के वन्दनीय विद्वज्जन पधारे। वार्षिकोत्सव के प्रथम दिवसीय कार्यक्रम का शुभारम्भ सुश्री आर्यरत्न वेदशिरोमणि आचार्य सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी के ब्रह्मत्त्व में अथर्ववेद पारायण यज्ञ के माध्यम से हुआ यज्ञीय मन्त्रों का सस्वर वेदपाठ गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया। यज्ञ के मध्य आचार्या जी ने बताया कि- **नौर्हैवा एषा स्वर्ग्या यदग्निहोत्रम** अर्थात् यह यज्ञ स्वर्ग की वह नौका है, जिससे संसाररूपी नदी से पार तरा जा सकता है, अतः अग्निहोत्र प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए। यज्ञोपरान्त श्री कमलेश जी अहमदाबाद ने गुरुकुल प्रांगण में ध्वजारोहण किया, ध्वजगीत ब्रह्मचारिणियों ने गाया। ततः नवनिर्मित अतिथिशाला का उद्घाटन वैदिक मन्त्रों के द्वारा सम्पन्न हुआ। अहमदाबाद से पधारे श्री कमलेश शास्त्री ने आचार्याद्वय के तप, त्याग एवं साधना की भूरिशः प्रशंसा की तथा **एकं सदविप्राः बहुधा वदन्ति** की व्याख्या करते हुये बताया कि उस परमपिता परमेश्वर के एक नाम को विप्र लोग बहुत प्रकार से बोलते हैं, किन्तु उस परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् हैं। इस प्रथम सत्र का संचालन आचार्या डॉ.

धारणा याज्ञिकी ने किया।

द्वितीय दिवसीय सभा का शुभारम्भ पं. सत्यपाल सरल-देहरादून के माध्यम से हुआ। आपने ऋषिवर दयानन्द के उपकारों का बखान किया। गुरुकुल की चर्या में कहा आज देश-विदेश के समस्त गुरुकुलों में उच्च स्थान को प्राप्त आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज है। आचार्याओं ने सभी का धन्यवाद किया, शान्तिपाठ के साथ हर्षोल्लासपूर्वक दो दिवसीय आयोजित कार्यक्रम का समापन हुआ।

११. यज्ञ सम्पन्न- ग्राम मोरवी, जीन्द, हरियाणा में १० जुलाई २०१६ को सामूहिक यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें परोपकारिणी सभा, अजमेर से पधारे स्वामी सोमानन्द जी ने कार्यक्रम को सम्पन्न कराया। व्यसन मुक्ति हेतु लोगों को उपदेश दिया। उससे प्रभावित होकर कई लोगों ने व्यसन से दूर रहने का संकल्प यज्ञोपवीत पहन कर लिया। ११ जुलाई को झज्जर के सुर्खपुर ग्राम में भी यज्ञ और उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया।

१२. वेद प्रचार सम्पन्न- ग्राम भावसिया, परबतसर, जि. नागौर, राज. में १५ व १६ जुलाई २०१६ को परोपकारिणी सभा, अजमेर व नागौर जिला सभा द्वारा वेद प्रचार का कार्यक्रम हवन, प्रवचन के साथ सम्पन्न कराया गया। 'समाज में फैले अन्धविश्वास एवं पाखण्ड' तथा 'ईश्वर का वैदिक स्वरूप' विषय पर प्रवचन हुये। यज्ञ के ब्रह्मा परोपकारिणी सभा, ऋषि उद्यान, अजमेर से पधारे स्वामी सोमानन्द जी रहे।

चुनाव समाचार

१३. आर्यसमाज बीसलपुर, जि. पीलीभीत, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, **मन्त्री**- श्री भूपराम आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री मोहनस्वरूप को चुना गया।

शोक समाचार

१४. आर्यसमाज मॉडल टाऊन के वरिष्ठ उपप्रधान एवं स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी के **पति श्री गोकुलचन्द भगत** का दि. १९ जून २०१६ को देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से वेद मन्त्रों की ऋचाओं के द्वारा मॉडल टाऊन जालन्धर के श्मशान घाट पर किया गया। शहर के सभी पुरोहितों, विद्वानों एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेदमन्त्रों के उच्चारण से संस्कारविधि के अनुसार अन्तिम संस्कार सम्पन्न कराया। शहर के गणमान्य महानुभावों ने श्री भगत को अन्तिम विदाई देकर श्रद्धासमुन अर्पित किए। श्री भगत जी का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रति समर्पित रहा। आर्य समाज मॉडल टाऊन के विभिन्न पदों पर रहकर वे समाज सेवा का कार्य करते रहे। श्री गोकुलचन्द का जीवन आध्यात्मिक था। घर में प्रतिदिन यज्ञ करना, उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। भगत जी का सम्पूर्ण परिवार आर्यसमाज के साथ तन-मन-धन से जुड़ा हुआ है। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला भगत स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में प्रधाना के रूप में समाज सेवा का कार्य कर रही है। विभिन्न संस्थानों, गुरुकुलों के साथ जुड़कर दिन-प्रतिदिन उनकी सेवा कर रही हैं। श्री भगत के पुत्र उनके पदचिह्नों पर चलते हुए उनके कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। सम्पूर्ण परिवार उनके आदर्शों के अनुसार ही समाज में कार्य कर रहा है। श्री गोकुल चन्द जी अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन त्यागमय था। श्री भगत जी की आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन २२ जून २०१६ को जैन भवन कपूरथला रोड, जालन्धर में किया गया। पवित्र वेद मन्त्रों के द्वारा उनकी आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। इससे पूर्व परिवार में प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल दोनों समय यज्ञ होता रहा। अन्तिम शोक सभा में शहर के तमाम राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के गणमान्य महानुभावों ने पधार कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। भिन्न-भिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने इस अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। परमपिता परमात्मा ऐसी पवित्र आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे। शोकसंतप्त परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति व धैर्य प्रदान करे।

१५. डॉ. सुशील रत्न जी का असामयिक निधन हो गया। आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं समाज सेवी थे, उनका जीवन आध्यात्मिक था, आप दानवीर थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से वेद मन्त्रों की ऋचाओं के द्वारा किया गया।

१६. माता जी अन्नपूर्णा जी, जो शाहपुरा आर्य समाज की कर्मठ कार्यकर्त्री थी, उनका असामयिक निधन २२ मई २०१६ को हो गया, इससे आर्यजगत् को बहुत क्षति हुई है। आप धार्मिक, विदुषी एवं गौ भक्त थी। आप दानशील एवं सेवाभावी थीं। यथायोग्य दान करने की भावना रहती थी एवं यथाशक्ति दान देती रहती थीं। आप पूर्व में अध्यापन भी करती थी। आपका वर्चस्व एवं सद्भावना अनुकरणीय रहेगी।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-३८

आ त्वागमं शंतातिभिरथो अरिष्ट तातिभिः।
दक्षं ते भद्रमाभार्षं परा यक्ष्मं सुवामि ते।।

इससे पूर्व मन्त्र में वायु की शुद्धता से रोग को दूर करने की तथा रोगी के अन्दर बल संचार करने की चर्चा की गई थी। इस मन्त्र में वैद्य अपने सामर्थ्य का वर्णन कर रहा है। जब रोगी पीड़ा से त्रस्त होता है, उसे वैद्य की आवश्यकता अनुभव होती है। रोगी को विश्वास होता है कि चिकित्सक रोग और पीड़ा को दूर कर देगा। चिकित्सक को भी वैसा ही होना चाहिए। चिकित्सा ऐसा कार्य है, जिसमें मनुष्य पर असीम उपकार करने का सामर्थ्य होता है। यह सामर्थ्य वैद्य के अन्दर नैतिक और मानवीय गुण होने पर ही सम्भव है।

वैद्य के सामने रोगी विवश होता है। चिकित्सक योग्य एवं धार्मिक है, तो वह रोगी को प्राणदान कर सकता है, यदि मूर्ख या लोभी हो तो उसका जीवन भी नष्ट कर सकता है। चिकित्सा शास्त्र में इसी आधार पर चिकित्सकों के दो भेद किये गये। पहले वे हैं जो रोगी के प्रति सद्भाव रखते हैं, उसके कष्ट को दूर करने की इच्छा रखते हैं। रोगी की पीड़ा को दूर करके उसे स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते हैं, ऐसे चिकित्सक **रोगाभिसर** कहलाते हैं। इसके विपरीत स्वार्थी एवं अज्ञानी चिकित्सक रोगी के प्राणों का हरण करने वाले होते हैं, अतः उन्हें **प्राणाभिसर** कहा गया है।

अच्छे चिकित्सक के पास शास्त्रीय ज्ञान तो होता ही है, उसके साथ ही योग्य चिकित्सक गुरुओं के पास रहकर वह अनुभव भी प्राप्त किया रहता है, क्रिया को अनेक बार होते हुये देखा होता है। इससे कार्य में दक्षता प्राप्त होती है। चिकित्सक को मन-वचन-कर्म से पवित्र रहने का निर्देश दिया गया है। ऐसा व्यक्ति ही मन्त्र की भाषा बोल सकता है।

मन्त्र में चिकित्सक रोगी को कह रहा है- मैं तेरे पास आ गया हूँ, अब डरने की आवश्यकता नहीं है। मेरे पास ऐसे उपाय हैं, जिनसे मैं तुम्हारा कल्याण कर सकता हूँ। **त्वा आगमम्**- मैं तुम्हारे पास आया हूँ। **शंतातिभिः** कल्याण करने वाले उपाय से। उपाय जानने वाला कभी विषम परिस्थितियों में किंर्त्तव्यविमूढ़ नहीं होता, इसलिये युक्ति जानने वाले चिकित्सक की शास्त्र में प्रशंसा की गई है। **उपरितिष्ठति युक्तिज्ञः द्रव्य ज्ञानवतां सदा**- जो लोग द्रव्य औषध के विषय से परिचित हैं, परन्तु देश, काल, परिस्थिति में उनका उपयोग कैसे किया जाय, इसका विचार नहीं रखते, वे अनेक बार सफल नहीं हो पाते। अतः युक्तिज्ञ को शास्त्रज्ञान वालों से ऊँचा स्थान दिया गया है।

मन्त्र कह रहा है- मेरे पास दोनों उपाय हैं, एक जो **शं**= कल्याण करने वाले हैं, स्वास्थ्य को बढ़ाने वाले हैं, दूसरे उपाय है- **अरिष्ट तातिभिः** जो लक्षण तुम्हारे में रोग के हैं, उनके निराकरण का उपाय भी मेरे पास है। चिकित्सा दोनों प्रकार की होती है- विकार की शान्ति तथा स्वास्थ्य की उन्नति। इसको मन्त्र के उत्तरार्ध में इस प्रकार कहा गया है- **दक्षं ते भद्रमाभार्षं,** मेरी चिकित्सा में बल बढ़ाने की योग्यता है। औषध रोग निवारक सामर्थ्य की वृद्धि में सहायता करती है। शरीर के अन्दर यदि रोग निरोधक क्षमता शेष न रहे, तो औषध निष्प्रभावी हो जाती है। यहाँ वैद्य रोगी से कह रहा है- **दक्षं ते भद्रं** अर्थात् तुम्हारे शरीर का कल्याण करने वाली, बल बढ़ाने वाली औषध मैं तुम्हारे लिये लाया हूँ। इससे तुम्हारा बल निश्चय ही बढ़ेगा।

अन्त में कहा गया है- **परा यक्ष्मं सुवामि**- रोग को शरीर से समाप्त ही करता हूँ। परा-दूर बहुत दूर रोग को हटाता हूँ। रोग के कारण तो सब स्थानों पर रहते हैं, परन्तु सभी लोग तो उससे पीड़ित नहीं होते। सभी रोगी नहीं हो जाते। जो बलवान हैं, जिनके पास रोग को रोकने का सामर्थ्य है, उस वातावरण में रहकर भी वे रोगी नहीं होते। जो दुर्बल होते हैं, जिनमें रोग निरोधक क्षमता नहीं है या स्वल्प है, उनको ही रोग पकड़ते हैं। अतः चिकित्सक कहता है- मैं रोगी को ऐसी औषध दे रहा हूँ, जिससे भविष्य में रोगी इन रोगों से बचा रहे। रोग उस पर आक्रमण करने में समर्थ न हो।

क्रमशः ....

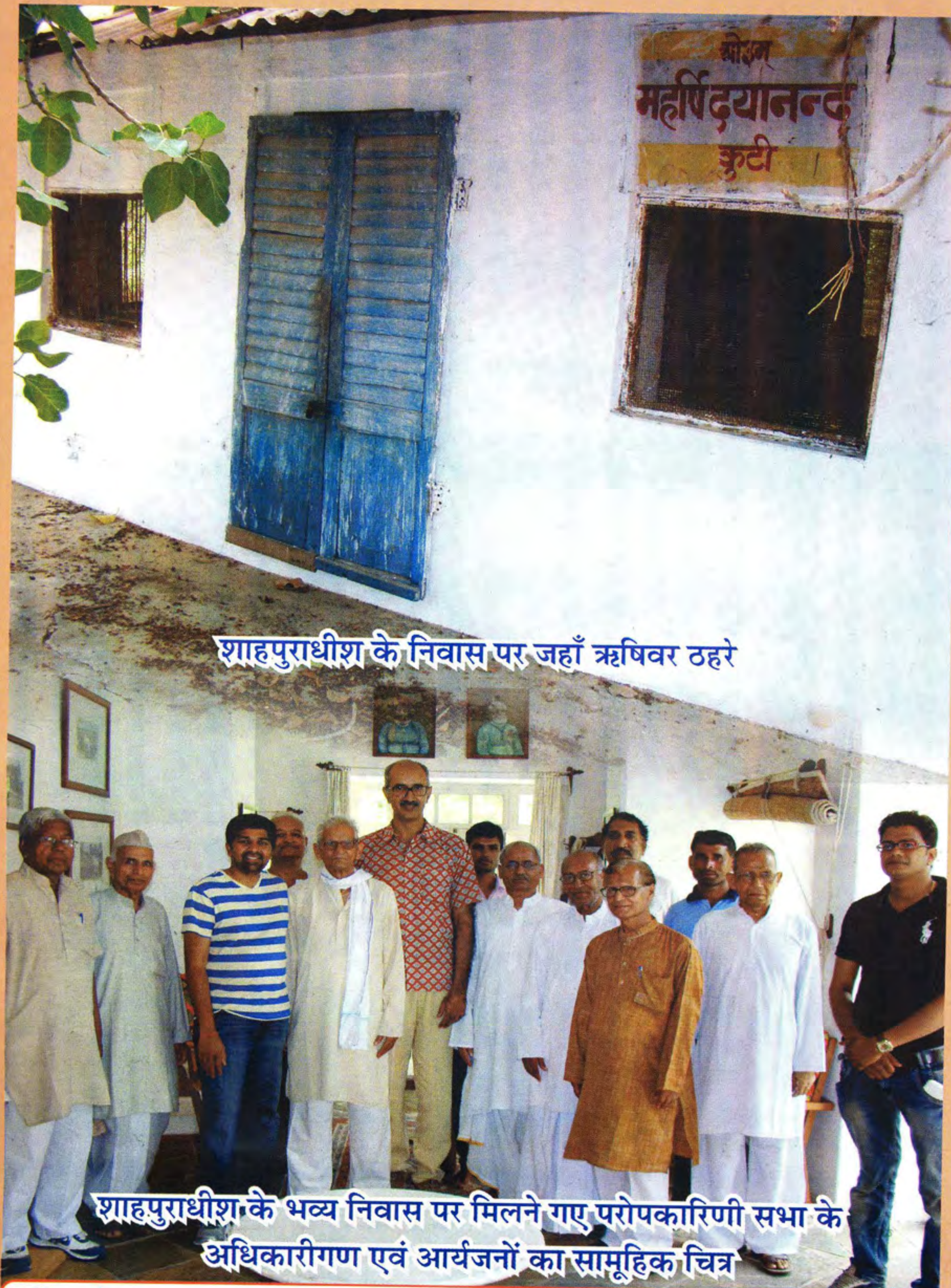

शाहपुराधीश के निवास पर जहाँ ऋषिवर ठहरे

शाहपुराधीश के भव्य निवास पर मिलने गए परोपकारिणी सभा के अधिकारीगण एवं आर्यजनों का सामूहिक चित्र

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : ३० जुलाई , २०१६ ३९५९/५९

ज्योतिष का परिचय देते हुए आचार्य दार्शनेय लोकेश जी

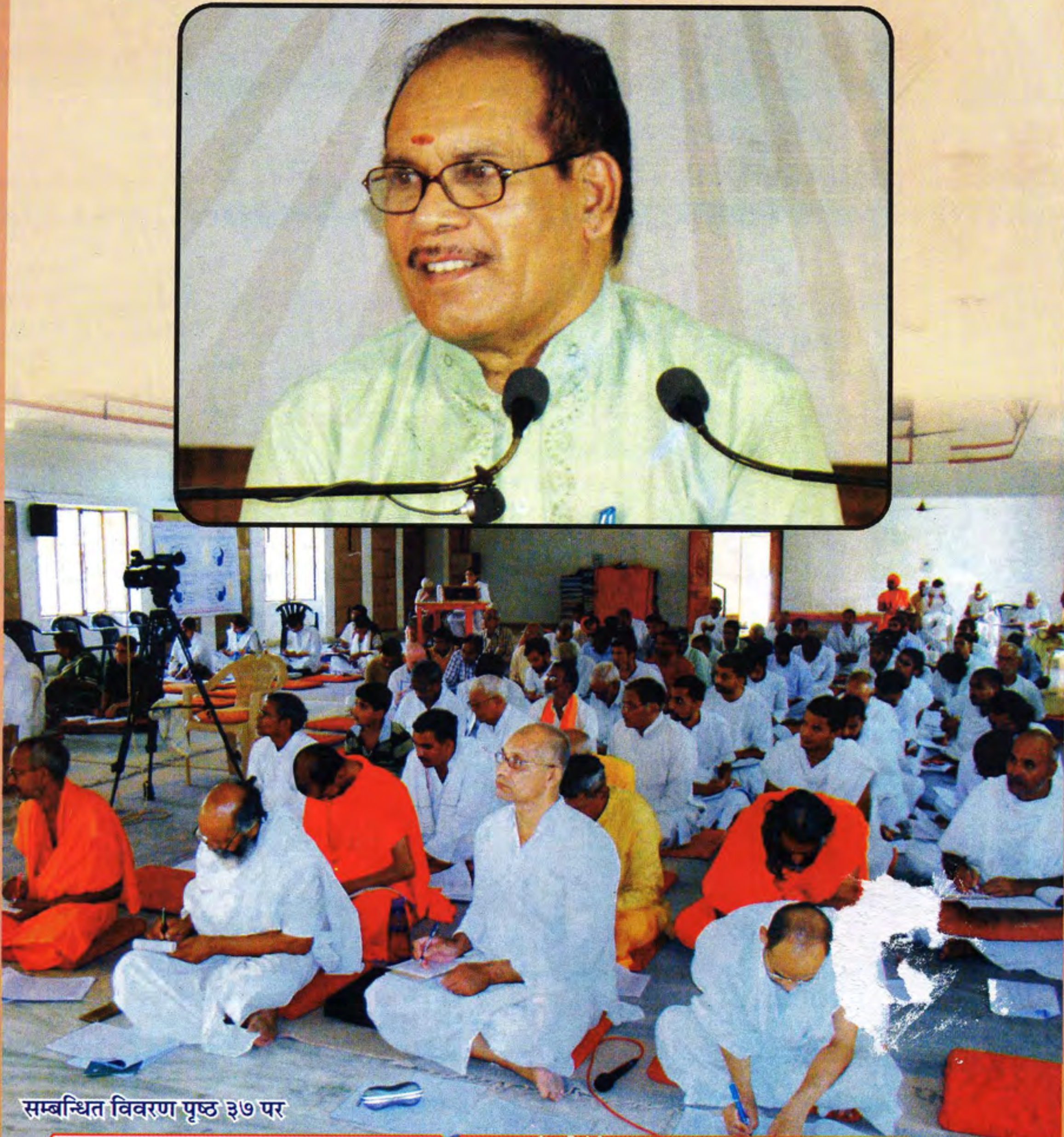

सम्बन्धित विवरण पृष्ठ ३७ पर

प्रेषकः

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकिट